टेलीविजन
यादों का झरोखा

हिंदी विवेक
WE WORK FOR A BETTER WORLD
Issue : 08 - 21 November 2026



TJSB SAHAKARI BANK LTD. MULTI-STATE SCHEDULED BANK
Bharose ka Bank Bhavishya ka Bank

THE SMART WAY TO MANAGE
YOUR SOCIETY FINANCES

BENEFITS

Advance Data Management & Reporting
Supporting Services & Broadcasting Facility
Vehicle Management
Dues & Reciept Management
Maintenance Bill Payment Via UPI & Payment Gateway



www.tjsb.bank.in | ✆ : 022-48897204

अनुक्रमणिका

मधुर स्मृतियों का संसार	डॉ. विनोद चोपड़ा	04
टेलीविजन का वो सुनहरा दौर...	डॉ. राकेश भट्ट	06
बदलता स्वरूप और दर्शक रुचि	सुनीता माहेश्वरी	08
चल अरग के बेर	परिणीता सिन्हा 'स्वयंसिद्धा'	11
ईंधन का नया विकल्प: ई-100	डॉ. संतोष झा	13
ट्रंप-नेतन्याहू की पराजय	रंजीत कुमार	15
एमएलसी चुनाव का सबक	रामेन्द्र सिन्हा	18
पुरुषार्थ की अनकही गाथा	मुकेश गुप्ता	20
ठंड से बचाव कुछ जरूरी सुझाव	सुभाष चंद्र लखेड़ा	23
वैदिक सनातन संस्कृति एवं जनजातीय परम्परा	श्रीश देवपुजारी	25
शताब्दी वर्ष के कार्यक्रमों की समीक्षा	संकलन	27
समाचार	संकलन	29

पंजीयन शुल्क

UPI पेमेंट गेटवे के लिए QR कोड स्कैन करें और मैसेज बॉक्स में अपना नाम, पता व सम्पर्क नम्बर दर्ज करें।

वार्षिक मूल्य : 500 रुपये, त्रैवार्षिक मूल्य : 1200 रुपये
पंचवार्षिक मूल्य : 1800 रुपये, आजीवन मूल्य : 25,000 रुपये

कार्यालय : प्लॉट नम्बर 7, आरएससी रोड नम्बर-10, सेक्टर-2, श्रीकृष्ण बिल्डिंग के पीछे, हनुमान मंदिर बस स्टॉप के समीप, चारकोप, कांदिवली (पश्चिम), मुंबई- 400067 फोन नं. : 022-28675299, 022-28678933



डॉ. विनोद चोपड़ा

आवश्यकता इस बात की है कि हम तकनीक का उपयोग विवेकपूर्ण ढंग से करें और उसके कारण अपने सामाजिक तथा पारिवारिक संबंधों को कमजोर न होने दें। विश्व टेलीविजन दिवस हमें यह सोचने का अवसर देता है कि तकनीक का वास्तविक उद्देश्य केवल मनोरंजन प्रदान करना नहीं, बल्कि मानव जीवन को बेहतर बनाना भी है।

21 नवम्बर को प्रतिवर्ष विश्व टेलीविजन दिवस मनाया जाता है। जिस टेलीविजन को कभी बुद्धू बक्सा कहा जाता था, वो आगे चल कर कैसे परिवार का हिस्सा बन गया, कोई नहीं जानता। मानो टेलीविजन एक सदस्य हो परिवार का और सही भी है टेलीविजन की उपस्थिति से घर चहकने लगता है। यह दिवस केवल टेलीविजन नामक एक तकनीकी आविष्कार की उपलब्धियों को याद करने का अवसर नहीं है, बल्कि यह संचार, सूचना, शिक्षा और मनोरंजन के क्षेत्र में उसके योगदान का मूल्यांकन करने का भी दिन है। टेलीविजन ने मानव जीवन की दिनचर्या, सामाजिक व्यवहार और पारिवारिक संबंधों को गहराई से प्रभावित किया है। आज भले ही मोबाइल फोन, इंटरनेट और सोशल मीडिया ने मनोरंजन के अनेक नए विकल्प उपलब्ध करा दिए हों, लेकिन एक समय ऐसा भी था जब टेलीविजन लोगों के मनोरंजन का सबसे लोकप्रिय और लगभग एकमात्र घरेलू साधन हुआ करता था। उस दौर की यादें आज भी मन में एक विशेष प्रकार की आत्मीयता और अपनापन पैदा करती हैं।

टेलीविजन आकर्षण का केंद्र

एक समय था जब टेलीविजन देखना किसी उत्सव से कम नहीं होता था। आज की नई पीढ़ी इस डिजिटल युग में शायद ही ऐसी कल्पना कर पाए। बीते जमाने में प्रत्येक घर में टीवी उपलब्ध नहीं था। पूरे गांव में मुश्किल से एक या दो टेलीविजन हुआ करते थे, वो भी सम्पन्न परिवारों के पास। जिन घरों में टीवी होता था, वे मोहल्ले और गांव के लोगों के लिए आकर्षण का केंद्र बन जाते थे। शाम होते ही लोग अपने कामकाज निपटाकर टेलीविजन देखने की तैयारी करने लगते थे। जिस परिवार में टेलीविजन होता, वो भी घर आए हुए लोगों का मेहमानों की तरह स्वागत करते। जहां भी स्थान मिलता लोगों को बिठाया जाता। कुछ चारपाई पर, तो कुछ चटाई पर बैठ जाते और टेलीविजन का भरपूर आनंद लेते।

मधुर स्मृतियों का संसार



मुझे अपने बचपन की याद है कि रविवार हमारे लिए विशेष होता था। प्रातः काल चित्रहार का समय होता और हम सभी बच्चे पड़ोस में पहुंच जाते चित्रहार देखने। शाम पौने पांच बजे फिर से हम जा धमकते फिल्म देखने। पहले पंद्रह मिनट मशहूरियां आती थी। उन्हें देखने का भी हम आनंद लेते। हमें लगभग सभी मशहूरियां याद थी। वाशिंग पाउडर निरमा, डाबर दंत मंजन- राजू तुम्हारे दांत तो मोतियों से चमक रहे है या बरातियों का स्वागत पान पराग से होना चाहिए। हम भी शोर करते और साथ-साथ गाते भी। धन्य थे वे लोग जो किसी को मनोरंजन मिलने पर होने वाले सकून से खुश होते और गौरवान्वित महसूस करते। वो पल उनके लिए गौरवमयी होते। कभी भी उनके माथे पर शिकन तक नहीं होती। यही सच्चे रिश्ते हुआ करते थे।

आज भी याद है कि जब रामायण और महाभारत जैसे लोकप्रिय धारावाहिकों का प्रसारण होता था, तब जिन घरों में टेलीविजन नहीं होता था, वहां के लोग पड़ोसियों के घर जाकर कार्यक्रम देखते थे। रविवार की सुबह रामायण देखने के लिए लोगों का एकत्रित होना किसी सामाजिक आयोजन से कम नहीं था। महाभारत के प्रसारण के समय भी घरों में विशेष उत्सुकता दिखाई देती थी। धारावाहिक शुरू होने से पहले ही लोग अपनी जगह सुनिश्चित कर लेते थे। कई बार घरों में बैठने की जगह कम पड़ जाती थी, लेकिन लोगों का उत्साह कम नहीं होता था।

टेलीविजन एवं सामाजिक समरसता

उन दिनों टेलीविजन केवल मनोरंजन का माध्यम नहीं था, बल्कि सामाजिक रिश्तों को मजबूत करने का एक महत्वपूर्ण सेतु भी था। टेलीविजन देखने के बहाने कई और सुख-दुख भी सांझा होते थे। पड़ोसियों के घर एकत्रित होकर कार्यक्रम देखने से आपसी मेलजोल बढ़ता था। लोग एक-दूसरे की समस्याओं को समझते थे। टीवी देखने के बहाने चाय-नाश्ते का दौर चलता था। कार्यक्रम के दौरान पात्रों के व्यवहार, घटनाओं और संवादों पर चर्चा होती थी। लोग अपनी भावनाएं व्यक्त करते थे, हंसते थे और कभी-कभी भावुक भी हो जाते थे। कभी ठहाके तो कभी अश्रु धारा बहती।

विशेष बात यह थी कि उस समय लोगों के बीच आत्मीयता और अपनापन अधिक दिखाई देता था। किसी एक घर का टेलीविजन पूरे मोहल्ले की साझा खुशी का साधन बन जाता था। न कोई औपचारिक निमंत्रण होता था और न ही किसी विशेष व्यवस्था की आवश्यकता। लोग सहज रूप से एक-दूसरे के घर पहुंच जाते थे। इस प्रकार टेलीविजन ने अनजाने में ही सामाजिक एकता, सहयोग और सामुदायिक भावना को मजबूत करने का कार्य किया।

परिवार को एक साथ बैठाने वाला माध्यम

पारिवारिक एकता को बनाए रखने के लिए भी टेलीविजन का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। उस दौर में परिवार के सदस्य प्रायः शाम को एक साथ बैठकर समाचार और धारावाहिक देखते थे। भोजन का समय भी कई बार टीवी कार्यक्रमों के अनुसार निर्धारित होता था। परिवार के सभी सदस्य एक साथ बैठकर खाना खाते, कार्यक्रम देखते और उसके विषय में बातचीत करते थे। बच्चे अपने माता-पिता और दादा-दादी के साथ बैठकर कार्यक्रम देखते थे। बुजुर्ग अपने अनुभव साझा करते थे और बच्चे उनसे प्रश्न पूछते थे। इसी तरह बच्चों को भी जाने अनजाने संस्कार मिल जाते। बड़ों के साथ बैठ कर कैसे बात करनी है, आदि आदि। समाचारों के माध्यम से देश-दुनिया की घटनाओं की जानकारी मिलती थी, जबकि धारावाहिक सामाजिक और सांस्कृतिक मूल्यों से परिचित कराते थे। इस सामूहिक अनुभव से परिवार के सदस्यों के बीच संवाद और भावनात्मक जुड़ाव बना रहता था।

'मालगुडी डेज', 'हम लोग', 'बुनियाद', 'नुक्कड़' जैसे धारावाहिकों ने भारतीय समाज के विभिन्न पक्षों को प्रस्तुत किया। वहीं रामायण और महाभारत जैसे धारावाहिकों ने भारतीय संस्कृति, धार्मिक परंपराओं और नैतिक मूल्यों को जन-जन तक पहुंचाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। इन कार्यक्रमों को देखने के लिए पूरा परिवार ही नहीं, बल्कि कई बार पूरा मोहल्ला एकत्रित हो जाता था।

डिजिटल युग में टेलीविजन संस्कृति

आज दर्शक अपनी पसंद के कार्यक्रम किसी भी समय और किसी भी स्थान पर देख सकते हैं। मोबाइल फोन ने मनोरंजन को व्यक्तिगत बना दिया है, लेकिन दुख के साथ कहना पड़ रहा है कि आज प्रत्येक कमरे में टेलिविजन हो गया है। संपन्नता के साथ रिश्ते संकुचित हो गए हैं। अब एक ही परिवार में बातचीत का दौर कम हो गया है। निस्संदेह, आधुनिक तकनीक ने सुविधाएं बढ़ाई हैं, लेकिन इसके साथ सामूहिक रूप से बैठकर कार्यक्रम देखने की परंपरा कमजोर हुई है। पहले जहां एक कार्यक्रम देखने के लिए पूरा परिवार उत्साहित रहता था, वहीं आज हर व्यक्ति अपनी पसंद और सुविधा के अनुसार अलग-अलग सामग्री देखता है। परिणामस्वरूप पारिवारिक बातचीत और सामाजिक मेलजोल के अवसर भी कम होते दिखाई देते हैं। विश्व टेलीविजन दिवस का एक महत्वपूर्ण संदेश यही है कि मानवीय रिश्तों की गर्माहट और साथ बैठकर बिताए गए पलों का महत्व कभी कम नहीं होना चाहिए।

●●●

आकर्षण

टेलीविजन ने हमें समाचार दिए, मनोरंजन दिया, ज्ञान दिया और दुनिया से परिचित कराया, लेकिन पुराने विज्ञापनों के जिंगल्स ने हमें कुछ अनमोल स्मृतियां भी दीं, जिन्हें समय की धूल कभी धुंधला नहीं कर पाती।



टेलीविजन का वो सुनहरा दौर...

कभी-कभी जीवन की सबसे खूबसूरत स्मृतियां किसी बड़े आयोजन, किसी ऐतिहासिक घटना या किसी महत्वपूर्ण उपलब्धि से नहीं बल्कि किसी छोटी-सी धुन, किसी आवाज और चंद शब्दों से जुड़ी होती हैं। ऐसी ही कुछ स्मृतियां हमारे टेलीविजन के पुराने दौर से जुड़ी हैं। वह दौर, जब टेलीविजन केवल मनोरंजन का माध्यम नहीं बल्कि पूरे परिवार के एक साथ बैठने, हंसने, सीखने और भावनात्मक रूप से जुड़ने का एक आत्मीय अवसर हुआ करता था।

विश्व टेलीविजन दिवस के अवसर पर जब हम टेलीविजन की यात्रा और उसके सामाजिक-सांस्कृतिक प्रभाव की चर्चा करते हैं, तो स्मृतियों के किसी कोने से पुराने विज्ञापनों के वे मनमोहक जिंगल्स भी झांकने लगते हैं, जिन्होंने हमारे बचपन और युवावस्था को एक अलग ही मिठास दी थी।

याद कीजिए वह समय, जब दूरदर्शन पर कोई लोकप्रिय धारावाहिक या फिल्म चल रही होती थी और अचानक कार्यक्रम के बीच विज्ञापनों का सिलसिला शुरू हो जाता था। दर्शक भले ही मुख्य कार्यक्रम के बीच आए इस अंतराल की प्रतीक्षा न करते हों, लेकिन विज्ञापनों की दुनिया भी अपने आप में किसी मनोरंजक कार्यक्रम से कम नहीं होती थी। कई बार तो विज्ञापनों के आने का इंतजार भी उतना ही रोचक होता था, जितना किसी धारावाहिक के अगले दृश्य का।



डॉ. राकेश भट्ट

उन विज्ञापनों की सबसे बड़ी विशेषता उनके जिंगल्स हुआ करते थे। छोटी-छोटी धुनें, सरल शब्द, आकर्षक संगीत और मन को सहज ही छू लेने वाली प्रस्तुति। उनकी लोकप्रियता का आलम यह था कि घर के बच्चे, बुजुर्ग, महिलाएं और युवा तक उन्हें गुनगुनाते दिखाई देते थे। कई बार उत्पाद का नाम भूल जाता था, लेकिन उसकी धुन और विज्ञापन के शब्द वर्षों तक स्मृतियों में सुरक्षित रहते थे।

निरमा की धुन और बचपन की शरारतें

कौन भूल सकता है निरमा वाशिंग पाउडर का वह लोकप्रिय विज्ञापन! सफेद कपड़ों में घूमती निरमा गर्ल और उसकी चिरपरिचित धुन ने भारतीय विज्ञापन जगत में एक अलग पहचान बनाई। उसका संगीत इतना सहज और आकर्षक था कि बच्चे-बच्चे की जुबान पर चढ़ गया था। आज भी कहीं इसकी धुन सुनाई दे जाए तो मन अनायास ही उस पुराने समय में पहुंच जाता है।

इसी तरह 'वॉशिंग पाउडर निरमा' की तर्ज पर गाए जाने वाले शब्द केवल किसी उत्पाद का प्रचार नहीं थे बल्कि एक पीढ़ी की सामूहिक स्मृति का हिस्सा बन गए थे।

रसना का स्वाद और बचपन की मिठास

'आई लव यू, रसना!' यह केवल एक विज्ञापन का वाक्य नहीं था बल्कि बच्चों की

दुनिया का एक प्यारा-सा हिस्सा था। रंग-बिरंगे पेय, बच्चों के चेहरे पर खुशी और रसना की आकर्षक प्रस्तुति ने इस विज्ञापन को बेहद लोकप्रिय बनाया। गर्मियों की छुट्टियां, घर में मेहमानों का आना और रसना का ठंडा गिलास, ये सब स्मृतियां आज भी उस दौर के लोगों के मन में एक मीठी मुस्कान पैदा कर देती हैं।

लिज्जत पापड़ और खरगोश की अठखेलियां

लिज्जत पापड़ का विज्ञापन भी अपने आप में अनूठा था। एक प्यारा-सा खरगोश, पापड़ की चटकदार दुनिया और मखर्ररम-खुर्रमम की ध्वनि! इस विज्ञापन ने यह सिद्ध कर दिया कि किसी उत्पाद को लोकप्रिय बनाने के लिए भव्यता से अधिक कल्पनाशीलता और मौलिकता की आवश्यकता होती है। उसकी प्रस्तुति में एक ऐसी बालसुलभ सहजता थी, जो हर उम्र के दर्शक को आकर्षित करती थी।

विको टर्मरिक और भारतीयता की सुगंध

'विको टर्मरिक, नहीं कॉस्मेटिक' का विज्ञापन भी स्मृतियों में विशेष स्थान रखता है। पारम्परिक भारतीय परिधान, विवाह का वातावरण और शास्त्रीय संगीत की छटा ने इस विज्ञापन को एक सांस्कृतिक पहचान प्रदान की। यह विज्ञापन केवल सौंदर्य प्रसाधन का प्रचार नहीं करता था बल्कि भारतीय परम्परा और घरेलू सौंदर्यबोध को भी सामने लाता था।





फेविकोल का मजबूत जोड़ और हास्य का संसार

फेविकोल ने विज्ञापन की दुनिया में हास्य को एक नई पहचान दी। 'फेविकोल का मजबूत जोड़ है, टूटेगा नहीं' जैसी अभिव्यक्ति ने सामान्य बोलचाल में भी अपनी जगह बना ली। कभी बस में यात्रियों से खचाखच भरी सीट, कभी विचित्र परिस्थितियां और कभी अप्रत्याशित हास्य! फेविकोल के विज्ञापन बताते थे कि रचनात्मकता और हास्य का संगम किसी भी संदेश को अमर बना सकता है।

मैगी, कैडबरी और स्वाद के साथ भावनाएं

मैगी के दो मिनट वाले विज्ञापन ने बच्चों की भूख और माताओं की व्यस्त दिनचर्या के बीच एक नया रिश्ता बनाया। वहीं कैडबरी के विज्ञापनों ने चॉकलेट को केवल मिठास नहीं बल्कि भावनाओं और खुशियों का प्रतीक बना दिया। 'कुछ खास है हम सभी में' जैसी अभिव्यक्ति ने विज्ञापन को मानवीय संवेदनाओं से जोड़ दिया।

बजाज का 'हमारा बजाज' भी इसी श्रेणी का एक यादगार उदाहरण है। यह विज्ञापन केवल एक वाहन का प्रचार नहीं था बल्कि भारतीय मध्यवर्ग के सपनों, आत्मनिर्भरता और बदलते सामाजिक जीवन का प्रतीक बन गया था।

जिंगल्स : विज्ञापन से आगे एक सांस्कृतिक विरासत

इन पुराने विज्ञापनों की विशेषता यह थी कि वे दर्शकों के मन पर अपना प्रभाव छोड़ने के लिए केवल चमक-दमक और तकनीक पर निर्भर नहीं थे। उनमें संगीतकारों की कल्पनाशीलता, गीतकारों की शब्द-सम्पदा, गायकों की मधुर आवाज और विज्ञापन निर्माताओं की रचनात्मक दृष्टि का सुंदर समन्वय दिखाई देता था।

आज विज्ञापन निर्माण की दुनिया बहुत आगे बढ़ चुकी है। डिजिटल तकनीक, सोशल मीडिया, एनीमेशन और अत्याधुनिक दृश्य प्रभावों ने विज्ञापनों का स्वरूप बदल दिया है। अब विज्ञापन कुछ ही क्षणों में दर्शकों तक पहुंच जाते हैं, लेकिन इस तेज गति के बीच कहीं न कहीं वह आत्मीयता, वह सरलता और वह संगीतात्मक आकर्षण कम होता दिखाई देता है, जिसने पुराने विज्ञापनों को पीढ़ियों तक जीवित रखा। अंततः इतना ही कहा जा सकता है कि उस दौर के विज्ञापन भले ही कुछ सेकंड के होते थे, लेकिन उनका प्रभाव दशकों तक बना रहा। वे पर्दे से उतरकर हमारी जुबान पर चढ़े और फिर हमारी स्मृतियों का स्थाई हिस्सा बन गए क्योंकि कुछ धुनें केवल सुनी नहीं जातीं, वे जिया करती हैं और टेलीविजन के उस सुनहरे दौर के विज्ञापनों के जिंगल्स ऐसी ही धुनें हैं, जो आज भी हमारे भीतर कहीं बजती रहती हैं। ●●●



सुनीता माहेश्वरी



हम तकनीक की इस चमक में अपनों के साथ बिताए जाने वाले खूबसूरत पलों को धुंधला नहीं पड़ने देंगे। कभी-कभार ही सही, पुरानी यादों को ताजा करते हुए परिवार के साथ बैठकर उस परदे पर कुछ साझा देखना, आज भी हमारे मन को सुकून दे सकता है।

बदलता स्वरूप और दर्शक रुचि

विज्ञान ने मानव जीवन को जितनी सुविधाएं प्रदान की हैं, उनमें टेलीविजन का आविष्कार एक महत्वपूर्ण उपलब्धि रहा है। विज्ञान की इस उपलब्धि ने दुनिया भर में लोगों को जोड़ने, शिक्षित करने, मनोरंजन करने और जनमत को प्रभावित करने में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन किया है।

1996 में संयुक्त राष्ट्र द्वारा 21 नवंबर को 'विश्व टेलीविजन दिवस' के रूप में मनाने की घोषणा की गई। यह दिवस हमें संचार माध्यम की यात्रा, उसके बदलते स्वरूप और समाज पर पड़ते उसके प्रभावों पर विचार करने का अवसर देता है।

भारत में टेलीविजन प्रसारण की शुरुआत 15 सितंबर 1959 को दिल्ली में प्रायोगिक रूप से हुई थी। तत्कालीन राष्ट्रपति डॉ. राजेंद्र प्रसाद ने इसका उद्घाटन किया। 1965 में नियमित प्रसारण शुरू हुआ और 1 अप्रैल 1976 को दूरदर्शन को आकाशवाणी से अलग स्वतंत्र विभाग बनाया गया। इस प्रकार टेलीविजन ने भारत में जनसंचार के एक प्रभावशाली माध्यम के रूप में अपनी पहचान बनाई।

टेलीविजन की विकास यात्रा पर जब विचार करते हैं तो वे दिन चित्र की तरह मन में उभरने लगते हैं, जब पहले पहल घरों में टीवी लगाए गए थे, उस समय अगर टीवी का सिग्नल ठीक से नहीं आता था, तब एक व्यक्ति छत पर चढ़ता और एंटीना ठीक करता और दूसरा नीचे से उसे बताता था कि टीवी ठीक आ रहा है या नहीं। उस समय टेलीविजन घर की बड़ी उपलब्धियों में गिना जाता था। जिस घर में टेलीविजन होता था, वहां पड़ोसियों और रिश्तेदारों का भी जमावड़ा लग जाता था। शाम होते ही परिवार के सदस्य अपने सारे काम समेटकर टेलीविजन के सामने बैठ जाते थे। रविवार की सुबह रामायण और महाभारत जैसे धारावाहिकों के प्रसारण के समय तो मानो पूरा मोहल्ला ही एक साथ ठहर जाता था। सड़कों पर सन्नाटा छा जाता, दुकानें बंद हो जातीं और लोग श्रद्धा एवं उत्सुकता से पर्दे पर प्रसारित दृश्यों को निहारते थे। धारावाहिक समाप्त होने के बाद उनके पात्रों और घटनाओं पर चर्चा होती थी। यह केवल कार्यक्रम देखना नहीं, बल्कि सामूहिक एवं सांस्कृतिक आनंद और पारिवारिक आत्मीयता का उत्सव हुआ करता था।

उस समय दूरदर्शन के सीमित कार्यक्रम और निश्चित प्रसारण समय होते थे। समाचार, कृषि दर्शन, चित्रहार, रंगोली, शैक्षिक कार्यक्रम, बाल कार्यक्रम और रविवार की फिल्में दर्शकों की प्रतीक्षा का विषय होती थीं। सप्ताह में प्रसारित होने वाले किसी लोकप्रिय धारावाहिक की अगली कड़ी देखने के लिए सात दिनों का इंतजार भी आनंददायक लगता था। उस प्रतीक्षा में एक अलग ही रोमांच और उत्सुकता छिपी होती थी, लेकिन समय का पहिया तेजी से घूमा और टेलीविजन की दुनिया में क्रांतिकारी परिवर्तन आने लगे। श्वेत-श्याम टेलीविजन ने रंगीन रूप धारण किया। दूरदर्शन के एकमात्र चैनल से शुरुआत हुई और धीरे-धीरे निजी चैनलों का प्रवेश हुआ।

आज केबल, डी.टी.एच. और अब स्मार्ट टीवी के इस दौर में हमारे पास मनोरंजन का अथाह समंदर है। अब यह तय करने वाले हम खुद हैं कि हमें क्या, कब और कैसे देखना है। किसी भी वक्त, किसी भी मूड में बटन दबाओ या स्क्रीन पर स्वाइप करो, फिल्मों से लेकर वेब सीरीज तक का पूरा संसार हमारी उंगलियों पर उपलब्ध है। अब टीवी सिर्फ एक 'डब्बा' नहीं रहा, बल्कि वह हमारी जेब में रखे स्मार्टफोन और घर के दीवार पर टंगे विशालकाय टीवी से जुड़कर एक स्मार्ट मल्टी मीडिया हब बन चुका है।

पहले कुछ घंटों के प्रसारण का दौर था, अब चौबीसों घंटे, सातों दिन अर्थात् 24/7 प्रसारण का युग है। दर्शक को अब किसी कार्यक्रम के लिए निर्धारित समय की प्रतीक्षा नहीं करनी पड़ती। समाचार चैनलों पर हर पल देश-दुनिया की हलचल दिखाई देती है। खेल प्रेमी सीधे प्रसारण के माध्यम से विश्व के किसी भी कोने में चल रहे मैच का आनंद ले सकते हैं। मनोरंजन चैनलों पर धारावाहिकों की निरंतरता बनी रहती है। धार्मिक चैनलों पर भजन, प्रवचन और तीर्थस्थलों के दर्शन उपलब्ध हैं। इस प्रकार टेलीविजन ने सूचना, शिक्षा और मनोरंजन के क्षेत्र में अपनी पहुंच का विस्तार किया है।

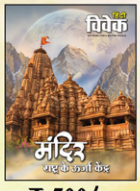
हालांकि इस परिवर्तन के कुछ नकारात्मक पक्ष भी हैं। चौबीस घंटे प्रसारित होने वाले समाचारों की होड़ में कई बार सनसनीखेज खबरों और अनावश्यक बहसों को अधिक महत्व दिया जाता है। टी.आर.पी. की प्रतिस्पर्धा में मनोरंजन की गुणवत्ता प्रभावित होती है। दूसरी ओर लगातार स्क्रीन के सामने बैठने से समय की बर्बादी, शारीरिक निष्क्रियता और आंखों पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ सकता है। बच्चों में भी खेलकूद, पठन-पाठन और रचनात्मक गतिविधियों के प्रति रुचि कम होने की आशंका रहती है, पर इन सब बातों से टीवी का महत्व कम नहीं हो जाता। हां, पुराने समय और आज के समय में टीवी के प्रयोग में बहुत अंतर आया है।

आज बेशक हमारे पास चैनलों और कंटेंट की कोई कमी नहीं है, लेकिन वह पुरानी वाली बाल-सुलभ ललक और दीवानगी आज जिंदा नहीं है। पहले पूरा परिवार एक साथ बैठकर एक ही कार्यक्रम देखता था- इससे संवाद के द्वार खुलते थे, आपसी रिश्ते गहरे होते थे और एक साझा अनुभव बनता था। आज भले ही हर कमरे में एक टीवी या हर हाथ में मोबाइल हो, लेकिन वह 'पारिवारिक जुड़ाव' कहीं पीछे छूट गया है। जरूरत इस बात की है कि हम तकनीक के इस वरदान का इस्तेमाल अपने रिश्तों को दूर करने के बजाय उन्हें जोड़ने के लिए करें।

आपकी आवाज को बुलंद करने वाली
सम्पूर्ण पारिवारिक व सामाजिक मासिक पत्रिका

पुस्तकों का खजाना

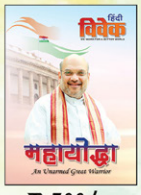
हिंदी विवेक
" We Work For A Better World"


₹ 700/-

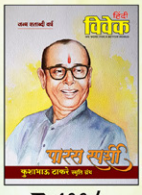

₹ 700/-


₹ 700/-

10 से अधिक प्रतियां बुक करने पर विशेष छूट दी जाएगी


₹ 700/-


₹ 700/-


₹ 400/-


₹ 60/-


₹ 200/-


₹ 500/-


₹ 250/-


₹ 180/-


₹ 250/-


₹ 250/-


₹ 150/-


₹ 200/-

Draft or Cheque should be drawn in the name of HINDUSTHAN PRAKASHAN SANSTHA HINDI VIVEK

• Bank Details : State Bank of India • Branch : Charkop,
• A/C No. : 00000043884034193 • IFSC Code : SBIN0011694

पंजीकरण हेतु पत्रिका के स्थानीय प्रतिनिधि अथवा कांदिवली कार्यालय में सम्पर्क करें।

प्लॉट नम्बर 7, आरएससी रोड नम्बर-10, सेक्टर-2, श्रीकृष्ण बिल्डिंग के पीछे, हनुमान मंदिर बस स्टॉप के समीप, चारकोप, कांदिवली (पश्चिम), मुंबई- 400067

UPI पेमेंट गेटवे के लिए QR कोड स्कैन करें और मैसेज बॉक्स में अपना नाम, पता व सम्पर्क नम्बर दर्ज करें।

प्रशांत : 9594961855 / भोला : 9930016472 / संदीप : 7045961331
कार्यालय : 9594991884 Email : hindivivekvargani@gmail.com

50+ YEARS OF MOMENTUM
अर्थ सहकारेण कल्याणम्

दि कल्याण जनता सहकारी बँक लि.
मल्टी-स्टेट शेड्युल्ड बँक

सोने तारण कर्ज



जलद कर्ज

कमी प्रक्रिया शुल्क

व्याजदर

९.५०%* वार्षिक

* अटी व शर्ती लागू

TOLL FREE: 1800 233 1919 kalyanjanata.in KJSBank

छठ पूजा



परिणीता सिन्हा 'स्वयंसिद्धा'

छठ ऐसा एक मात्र पर्व है, जिसमें उगते सूर्य को भी अर्घ्य दिया जाता है और डूबते सूर्य को भी अर्घ्य दिया जाता है। यह बहुत ही कठिन व्रत है और इसमें छठी मैया और भगवान सूर्य की आराधना व उपासना की जाती है।

छठ पूजा मनुष्य और प्रकृति के अटूट रिश्ते को परिभाषित करती है। इस पूजा के लिए दृढ़ संकल्प और धैर्य बहुत ही आवश्यक है। यह भारतीय संस्कृति के सबसे कठिन त्योहारों में से एक है। कार्तिक मास के शुक्ल पक्ष की चतुर्थी तिथि से प्रारम्भ होकर यह त्योहार सप्तमी तिथि को समाप्त होता है। चार दिनों तक चलने वाला यह महापर्व सदियों पुराना है। कुछ ग्रंथों में उल्लेख मिलता है कि रावण को परास्त करने के बाद भगवान श्रीराम और माता सीता ने भी छठ पूजा की थी। इसके अलावा महाभारत काल में द्रौपदी द्वारा भी छठ पूजा किए जाने की मान्यता प्रचलित है।

इस पूजा में सात्विक भोजन और शुद्धता का पूरा ध्यान रखा जाता है। छठ पूजा में छठी मैया और भगवान सूर्य की आराधना की जाती है। छठी मैया को ब्रह्मा की मानस पुत्री माना जाता है। कहा जाता है कि इनकी पूजा करने से असम्भव कार्य भी सम्भव हो जाते हैं।

नहाय-खाय के साथ इस व्रत की शुरुआत होती है। पहले दिन लौकी (घीया) की सब्जी, जिसमें सेंधा नमक डाला जाता है, चने की दाल, चावल, बचका (पकौड़ा) आदि बनाए जाते हैं।

दूसरे दिन यानी खरना को व्रती पूरे दिन निर्जला उपवास रखती हैं। शाम को पूजा-अर्चना के बाद गुड़ या चीनी से बनी खीर (रसिया), पूड़ी, केला इत्यादि का प्रसाद मिट्टी के ढक्कननुमा पात्र में रखकर चढ़ाया जाता है। इस पात्र पर नारंगी सिंदूर लगाया जाता है। इसके बाद दीप और हुमाद जलाकर दूध अर्पित किया जाता है। पूजा के पश्चात व्रती प्रसाद ग्रहण करती हैं और अन्य श्रद्धालुओं में भी प्रसाद वितरित करती हैं। सुहागिन महिलाओं को टीका और सिंदूर लगाया जाता है, जबकि बच्चों और पुरुषों को हुमाद का टीका लगाया जाता है। कई स्थानों पर इस दिन चावल और दाल बनाने की भी परम्परा है।

व्रत के तीसरे दिन यानी संध्या अर्घ्य के अवसर पर डूबते सूर्य को गंगाजल और दूध से अर्घ्य दिया जाता है। इस त्योहार में बांस से बने सूप और टोकरियों का विशेष प्रयोग होता है। यह पर्व प्रकृति से जुड़ा है, इसलिए इसमें प्राकृतिक वस्तुओं का सर्वाधिक उपयोग किया जाता है।

हमारे त्योहार एक तरह से प्राकृतिक संतुलन बनाए रखने में भी सहायक होते हैंत क्योंकि पूजा में प्रयोग की जाने वाली अधिकांश वस्तुएं जैविक रूप से विघटित हो जाती हैं और कोई विषैला अपशिष्ट नहीं छोड़तीं। छठ पूजा के प्रसाद में एक विशिष्ट पकवान यानी ठेकुआ का विशेष महत्व है। इसे बनाने की पूरी प्रक्रिया में बहुत सावधानी बरती जाती है। इसके अलावा चावल और गुड़ के लड्डू भी खास तौर पर बनाए

चल अरग के बेर



जाते हैं।

इस पूजा में फलों और सब्जियों की भी विशेष महत्ता होती है। नारियल, सेब, सिंघाड़ा, संतरा, अमरूद, केला, ईख, गागर नींबू, पनियाला, सूथनी, मकोई, मूली, कच्ची मकई, हल्दी जैसी सब्जियां एवं फल तथा सूखे मेवे विशेष रूप से सूप में सजाकर चढ़ाए जाते है। व्रती जल में आंशिक रूप से डूबकर हाथों में प्रसाद से भरा सूप उठाकर भगवान सूर्य की आराधना करती हैं। अन्य श्रद्धालु सूप के सामने गंगाजल और दूध से अर्घ्य अर्पित करते हैं। ऐसी मान्यता है कि इस व्रत के प्रभाव से असाध्य रोगों, विशेषकर त्वचा सम्बंधी रोगों से मुक्ति मिलती है।

चौथे दिन इसी प्रकार उगते सूर्य की पूजा की जाती है। इसके बाद व्रती पारण करती हैंम अर्थात भोजन ग्रहण करती हैं और इसी के साथ व्रत का समापन होता है।

छठ पूजा के बहाने ही सही, नदियों और घाटों की सफाई होती है और कहीं न कहीं यह पर्यावरण के लिए भी अच्छा है। इस त्योहार से धार्मिक सद्भावना भी प्रबल होती है। छठ मुख्यतः बिहार और उत्तर प्रदेश का त्योहार है, लेकिन धीरे-धीरे यह पूरे देश में मनाया जाने लगा है। इतना ही नहीं, भारतीय मूल के लोग विदेशों में भी इस त्योहार को बड़े धूमधाम से मनाने लगे हैं।

इस पूजा में लोकगीत भी जान फूंक देते हैं। चारों ओर फैली हुमाद की सुगंध एक तरह की दैवीय अनुभूति कराती है। पूजा में नवजात शिशुओं और परिवार में शामिल हुए नए सदस्यों का भी विशेष महत्व होता है।

इस पूजा के कई प्रकार हैं, जिनमें एक कष्टी छठ भी है। इसमें व्रती सबसे पहले पानी में उतरती हैं और बिना सूप उठाए पूरे समय सूर्य की आराधना करती हैं। अंत में वे पानी से बाहर आती हैं। यह व्रत स्त्री और पुरुष दोनों ही करते हैं।

समय के साथ इस पूजा में भी कई बदलाव आए हैं। पहले ठेकुआ बनाने के लिए गेहूं धोकर घर में ही जांता (पत्थर से बना पीसने का यंत्र) में पीसा जाता था, लेकिन अब बाजार में मिलने वाले पैकेटबंद आटे का प्रयोग होने लगा है। पहले मिट्टी के चूल्हे में लकड़ी जलाकर प्रसाद बनाया जाता था, लेकिन अब गैस चूल्हे का प्रयोग होने लगा है। पहले व्रती सिले हुए वस्त्र नहीं पहनती थीं, लेकिन अब वे पूरे साज-श्रृंगार के साथ पूजा करती हैं।

सच कहें तो समय के साथ यह त्योहार और भी अधिक प्रासंगिक हो गया है। पहले परिवार में एक-दो लोग ही यह व्रत करते थे, लेकिन अब कम आयु की अनेक महिलाएं भी श्रद्धापूर्वक यह व्रत करने लगी हैं। छठ पूजा के माध्यम से हमारी लोक संस्कृति भी संरक्षित हुई है। •••





ईंधन का नया विकल्प: ई-100

भविष्य की ऊर्जा नीति केवल एक विकल्प पर आधारित नहीं हो सकती। इलेक्ट्रिक वाहन, हरित हाइड्रोजन, बायोगैस और जैव ईंधन का संतुलित विकास आवश्यक है। पर्याप्त उत्पादन, किफायती कीमत और बेहतर वितरण व्यवस्था के माध्यम से ई-100 भारत की ऊर्जा सुरक्षा मजबूत करने तथा विकसित भारत 2047 के संकल्प को साकार करने में महत्वपूर्ण योगदान दे सकता है।



डॉ. संतोष झा

भारत अपनी बढ़ती ऊर्जा जरूरतों को पूरा करने, कच्चे तेल के आयात पर निर्भरता कम करने और पर्यावरण संरक्षण को बढ़ावा देने के लिए वैकल्पिक ऊर्जा स्रोतों की ओर तेजी से कदम बढ़ा रहा है। इसी दिशा में केंद्र सरकार ने एक महत्वपूर्ण पहल करते हुए 26 अक्टूबर 2026 को केंद्रीय मोटर वाहन नियम, 1989 में संशोधन कर ई-100 सहित उच्च एथेनॉल मिश्रण वाले ईंधन पर चलने वाले फ्लेक्स-फ्यूल वाहनों के लिए नियामकीय व्यवस्था स्पष्ट की है। इससे देश में शत-प्रतिशत एथेनॉल आधारित ईंधन के अनुकूल वाहनों के निर्माण, परीक्षण और प्रमाणन की संभावनाएं बढ़ेंगी।

यह निर्णय केवल परिवहन क्षेत्र में तकनीकी बदलाव नहीं, बल्कि भारत की दीर्घकालिक ऊर्जा नीति से भी जुड़ा है। देश की ऊर्जा सुरक्षा का संबंध अर्थव्यवस्था, विदेशी मुद्रा, किसानों की आय और पर्यावरण से है। विकसित भारत2047 के संकल्प को साकार करने के लिए ऊर्जा क्षेत्र में आत्मनिर्भरता हासिल करना आवश्यक है। ऐसे में ई-100 भारत के लिए एक महत्वपूर्ण वैकल्पिक ईंधन साबित हो सकता है।

ई-100 क्या है?

एथेनॉल एक जैव ईंधन है, जिसे मुख्यतः गन्ने के रस, शीरे, मक्का, अनाज और अन्य जैविक स्रोतों से तैयार किया जाता है। पेट्रोल में एथेनॉल मिलाने की व्यवस्था भारत में पहले से लागू है। ई-20 में 20 प्रतिशत एथेनॉल और 80 प्रतिशत पेट्रोल होता है, जबकि ई-85 में 85 प्रतिशत तक एथेनॉल होता है। ई-100 का अर्थ

लगभग शुद्ध एथेनॉल ईंधन से है। हालांकि सभी पेट्रोल वाहनों में ई-100 का इस्तेमाल नहीं किया जा सकता। इसके लिए वाहन को विशेष रूप से डिजाइन और प्रमाणित करना आवश्यक है। फ्लेक्स-फ्यूल वाहनों में इंजन प्रबंधन प्रणाली, सेंसर, पंप और इंजेक्टर जैसी तकनीक होती है, जो अलग-अलग अनुपात वाले पेट्रोल-एथेनॉल मिश्रण के अनुसार इंजन को संचालित करती है।

क्यों महत्वपूर्ण है ई-100?

भारत अपनी ऊर्जा जरूरतों के लिए बड़ी मात्रा में कच्चे तेल का आयात करता है। अंतरराष्ट्रीय बाजार में तेल की कीमतों में उतार-चढ़ाव का सीधा असर देश के व्यापार संतुलन, विदेशी मुद्रा



और उपभोक्ताओं पर पड़ता है। ऐसे में घरेलू स्तर पर उत्पादित एथेनॉल का उपयोग बढ़ने से पेट्रोलियम आयात पर निर्भरता कम होने की संभावना बढ़ेगी। एथेनॉल को केवल वैकल्पिक ईंधन के रूप में नहीं, बल्कि ऊर्जा सुरक्षा के साधन के रूप में भी देखा जा रहा है। भारत में कृषि क्षेत्र से उपलब्ध संसाधनों को ऊर्जा उत्पादन से जोड़कर देश अपनी ग्रामीण अर्थव्यवस्था को भी मजबूत कर सकता है।

किसानों के लिए नए अवसर

ई-100 और फ्लेक्स-फ्यूल तकनीक का विस्तार किसानों के लिए नए आर्थिक अवसर पैदा कर सकता है। गन्ना, मक्का और अन्य कृषि उत्पादों से एथेनॉल तैयार होने से किसानों को पारंपरिक खाद्य बाजार के अलावा ऊर्जा क्षेत्र में भी मांग मिल सकती है। एथेनॉल संयंत्रों के विस्तार से ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार बढ़ेगा तथा परिवहन, भंडारण, प्रसंस्करण और तकनीकी सेवाओं को प्रोत्साहन मिलेगा। इससे किसान ऊर्जा अर्थव्यवस्था के सहभागी बन सकते हैं। हालांकि खाद्य सुरक्षा, जल संरक्षण और कृषि भूमि के संतुलित उपयोग का ध्यान रखना जरूरी है।

पर्यावरण के लिए कितना उपयोगी?

पेट्रोल और डीजल पर अत्यधिक निर्भरता वायु प्रदूषण तथा ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन की समस्या को बढ़ाती है। एथेनॉल जैविक स्रोतों से तैयार होता है और पेट्रोलियम आधारित ईंधन के मुकाबले कम कार्बन-गहन परिवहन व्यवस्था बनाने में योगदान दे सकता है। हालांकि इसे पूरी तरह प्रदूषण-मुक्त ईंधन मानना सही नहीं होगा। इसके उत्पादन में खेती, सिंचाई, प्रसंस्करण और परिवहन के लिए ऊर्जा तथा जल की आवश्यकता होती है। एथेनॉल की वास्तविक पर्यावरणीय उपयोगिता इस बात पर निर्भर करेगी कि उसका उत्पादन किस फसल और किस तकनीक से किया जा रहा है। यदि कृषि अवशेषों और उन्नत तकनीक का अधिक इस्तेमाल किया जाए तो इसका पर्यावरणीय लाभ और बढ़ सकता है।

ऑटोमोबाइल उद्योग में नई संभावनाएं

ई-100 के लिए नियामकीय व्यवस्था स्पष्ट होने से भारतीय ऑटोमोबाइल उद्योग को नई तकनीक विकसित करने का अवसर मिलेगा। जून 2026 में मारुति सुजुकी ने भारत की पहली फ्लेक्स-फ्यूल कार पेश की, जिसे ई-20 से ई-100 तक के एथेनॉल मिश्रण के अनुरूप विकसित किया गया है। कंपनी के अनुसार इस वाहन में विशेष इंजन प्रबंधन प्रणाली और ईंधन तकनीक का इस्तेमाल किया गया है। इससे भारत में अनुसंधान एवं विकास, इंजन तकनीक, सेंसर, ईंधन प्रबंधन और वैकल्पिक ऊर्जा आधारित वाहन निर्माण को बढ़ावा मिल सकता है। भविष्य में भारतीय कंपनियां ऐसी तकनीक विकसित कर सकती हैं, जिसकी मांग अन्य कृषि-प्रधान देशों में भी हो।

चुनौतियां भी कम नहीं

ई-100 की सफलता के लिए व्यापक ईंधन वितरण नेटवर्क विकसित करना सबसे बड़ी चुनौती है। इसके लिए पेट्रोल पंपों पर उपलब्धता, भंडारण और परिवहन की उचित व्यवस्था करनी होगी। दूसरी चुनौती वाहनों की कीमत और ईंधन दक्षता है। एथेनॉल में पेट्रोल की तुलना में प्रति लीटर ऊर्जा कम होती है, समान दूरी तय करने में अधिक ईंधन खर्च हो सकता है। तीसरी चुनौती खाद्य सुरक्षा और जल संरक्षण की है। एथेनॉल उत्पादन के लिए गन्ने और खाद्यान्न फसलों पर अत्यधिक निर्भरता कृषि संसाधनों पर दबाव बढ़ा सकती है। इसलिए फसल विविधीकरण और कृषि अवशेषों से एथेनॉल उत्पादन को प्रोत्साहित करना आवश्यक है। विकसित भारत 2047 का लक्ष्य आर्थिक समृद्धि के साथ ऊर्जा, तकनीक, कृषि और पर्यावरण के क्षेत्र में आत्मनिर्भर एवं टिकाऊ भारत का निर्माण करना है। इस दृष्टि से ई-100 जैसी पहल महत्वपूर्ण है। घरेलू संसाधनों से एथेनॉल उत्पादन, कच्चे तेल के आयात में कमी और किसानों को ऊर्जा अर्थव्यवस्था से जोड़ना देश की आर्थिक आत्मनिर्भरता को मजबूती दे सकता है। ●●●



परिवर्तन

अमेरिका-इजरायल चुनाव नतीजों से भारत में राहत की सांस इसलिए ली जा रही है कि ट्रम्प और नेतन्याहू की पराजय से विश्व राजनीति अब सकारात्मक दिशा में लौट सकती है। चुनाव नतीजों के बाद पेट्रोल की कीमत में गिरावट और भारत के स्टॉक बाजार में लम्बे अर्से बाद आई उछाल इसके शुभ संकेत हैं।

ट्रंप-नेतन्याहू की पराजय

पिछले पखवाड़े के दौरान विश्व राजनीति इजरायल व अमेरिका के दुनिया को हैरान कर देने वाले चुनाव नतीजों पर केंद्रित रही। इन चुनावी नतीजों में जनादेश का झटका खाने के बाद यदिनेतन्याहऔर डोनाल्ड ट्रम्प ने इसका समुचित सम्मान किया तो विश्व राजनीति और अंतरराष्ट्रीय सम्बन्धों में सकारात्मक परिवर्तन की ओर जाते हुए हम देख सकते हैं।

गत 27 अक्टूबर को हुए इजरायल के चुनाव नतीजों ने प्रधान मंत्री बेंजामिननेतन्याहका राजनीतिक करियर समाप्त होने के कगार पर पहुंचा दिया, वहीं राष्ट्रपति ट्रम्प को अमेरिकी संसद (कांग्रेस) के ऊपरी सदन सीनेट और निचले सदन हाउस आफ रिप्रेजेनटेटिव्स (जन प्रतिनिधि सभा) के लिए 3 नवम्बर को सम्पन्न हर दो साल पर होने वाले चुनाव में भारी झटका लगा। इसकी वजह से अपने बचे हुए दो साल के कार्यकाल में राष्ट्रपति ट्रम्प के लिए अपना एजेंडा चलाना आसान नहीं रह जाएगा।

पहले इजरायल के चुनाव नतीजों की चर्चा करें। वहां प्रधान मंत्रीनेतन्याहकी सत्तारुढ़ लिकुड और मुख्य विपक्षी दल गादी आइजनकोट की याशार पार्टी को स्पष्ट बहुमत नहीं मिला।नेतन्याहको सरकार बनाने के लिए 61 सीटों की जरुरत है, जबकि उन्हें 53 और याशार पार्टी को 48 सीटें मिली हैं। इस तरह वहां त्रिशंकु संसद उभर कर आई है। इजरायली संसद (केनेसेट) के लिए हुए मतदान के बाद प्रधान मंत्रीनेतन्याहकी सत्तारुढ़ पार्टी को बहुमत के साथ सरकार बनाने के लिए अन्य छोटी पार्टियों का समर्थन मिलने की सम्भावना नहीं दिख रही, जबकि आइजनकोट की याशार पार्टी को मुख्यतः अरब मूल के दो दलों के गठजोड़, जिसे 19 सीटें मिली हैं का समर्थन मिलने की उम्मीद है। इसी आधार पर कयास लगाए जा रहे हैं कि इजरायल में आइजनकोट की सरकार बन सकती है। आइजनकोट ने सितम्बर, 2025 में याशार पार्टी की स्थापना की थी। याशार पार्टी एक मध्यमार्गी विचारों वाली पार्टी मानी जाती है। इसलिए माना जा रहा है कि अरब पार्टियों की 19 सीटों का समर्थन लेकर आइजनकोट सरकार बना सकते हैं। स्वाभाविक है कि यदि आइजनकोट अरब मूल के गठजोड़ पर निर्भर रहेंगे तो उन्हें फिलिस्तीनियों पर नरम रुख अपनाना पड़ेगा। इस तरह इजरायल में यदि आइजनकोट की सरकार बनी तो इजरायल फिलिस्तीनी इलाकों पर अंधाधुंध बमबारी नहीं कर सकेगा। इजरायल की फिलिस्तीन नीति में इस



रंजीत कुमार

तरह हम संतुलन देख सकते हैं। इससे पश्चिम एशिया में शक्ति संतुलन का एक नया समीकरण उभरते हुए हम देख सकते हैं।

यह एक रोचक संयोग है कि इजरायल के चुनावों मेंनेतन्याहकी लिकुड पार्टी को ऐसे वक्त झटका लगा है जब अमेरिका में सीनेट और जनप्रतिनिधि सभा के चुनावों में डोनाल्ड ट्रम्प की रिपब्लिकन पार्टो अल्पमत में आ गई है। 100 सीटों वाले सीनेट में रिपब्लिकन के सदस्य घटकर 44 और विपक्षी डेमोक्रेटिक पार्टी के बढ़कर 54 सदस्य हो गए हैं। इसी तरह जन प्रतिनिधि सभा में रिपब्लिकन पार्टी के सदस्य घट कर 162 रह गए हैं, जबकि डेमोक्रेटिक पार्टी के सदस्य बढ़कर 254 हो गए हैं।

इजरायल के राजनयिक हलकों में माना जा रहा है कि बेंजामिननेतन्याहको अपने देश के चुनाव नतीजों से तो झटका लगा ही है, अमेरिका में डोनाल्ड ट्रम्प को भी मतदाताओं का करंट लगने से वे हिले हुए महसूस कर रहे हैं। ट्रम्प को यदि झटका नहीं लगा होता तो वह इजरायल मेंनेतन्याहकी सरकार बनवाने के लिए प्रभावी जोड़तोड़ करने से नहीं चूकते।

गौरतलब है कि इजरायल द्वारा ईरान के खिलाफ भड़काए जाने के बाद डोनाल्ड ट्रम्प ने ईरान के खिलाफ बिना किसी उकसावे के बावजूद सैनिक कार्रवाई की। डोनाल्ड ट्रम्प द्वारा ईरान पर एकतरफा हवाई हमला से ईरान में हो रही व्यापाक तबाही को विश्व समुदाय ने पूरी तरह अमानवीय करार दिया। यहां तक कि डोनाल्ड ट्रम्प के प्रशासन के आला अधिकारियों में भी इस फैसले को लेकर गहरे मतभेद की बात अमेरिकी उप राष्ट्रपति जे डी वांस के इस बयान से उजागर हुई कि ईरान पर अमेरिका द्वारा एकतरफा सैन्य हमला करना गलत था, जिसका अमेरिकी मतदातातओं में भी विरोध हुआ।

ईरान पर अमेरिकी सैन्य हमले के लिए डोनाल्ड ट्रम्प ने कभी भी अमेरिकी सदनों में चर्चा नहीं करवाई। अमेरिकी कांग्रेस को विश्वास में लिए बिना डोनाल्ड ट्रम्प ने ईरान पर बेतहाशा बमबारी करवाई। वांस ने डोनाल्ड ट्रम्प की सीनेट और जन प्रतिनिधि सभा में पराजय के लिए एक और बड़ी वजह यह बताई कि ईरान युद्ध, देशों पर लगाए जाने वाले एकततरफा टेरिफ और कई अन्य आर्थिक फैसलों की वजह से अमेरिकी मतदाताओं ने अपनी नाराजगी साफ तौर पर उजागर कर दी।राष्ट्रपति ट्रम्प की विश्व ऊर्जा बाजार में विघटनकारी नीतियों की वजह से न केवल दुनिया बल्कि अमेरिकी बाजार में भी भारी प्रतिकूल असर पड़ा, जिसका सीधा असर अमेरिकी किसानों पर पड़ा, जो डीजल की कीमत में अप्रत्याशित बढ़ोतरी से परेशान थे।

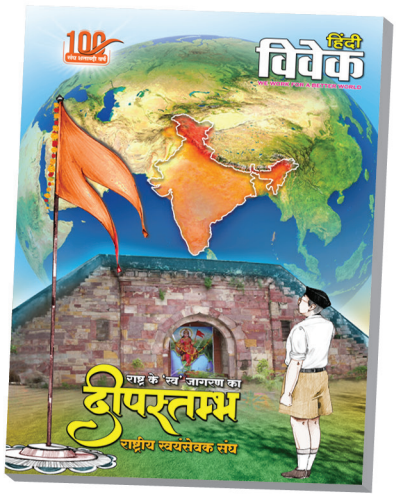
स्वयं के लिए और अपने परिजनों के लिए ग्रंथ का पंजीयन करें

इस ग्रंथ में आप पढ़ेंगे

- संघ में हो रहे अनगिनत सेवा कार्यों का परिणाम क्या है?
- डॉ. हेडगेवार जी से लेकर डॉ. मोहन भागवत जी तक के सभी सरसंघचालकों का दिशादर्शन...
- राजनीति को केंद्र में न रखकर राष्ट्रीयत्व को क्यों केंद्र में रखा?
- भारत के सम्मुख चुनौतियां और संघ कार्य का प्रभाव
- संघ विचारधारा और परिवर्तन

जैसे विविध मौलिक विषय

ग्रंथ का मूल्य ₹700/-



ईमेल – hindivivekvargani@gmail.com

Draft or Cheque should be drawn in the name of HINDUSTHAN PRAKASHAN SANSTHA HINDI VIVEK

Bank Details : State Bank of India, **Branch -** Charkop, A/C No. : 00000043884034193, IFSC Code : SBIN0011694

ग्रंथ पंजीकरण हेतु पत्रिका के स्थानीय प्रतिनिधि अथवा कांदिवली कार्यालय में सम्पर्क करें।

सम्पर्क

प्रशांत : 9594961855, संदीप : 9082898483
भोला : 9702203252, कार्यालय : 9594991884

UPI पेमेंट गेटवे के लिए QR कोड स्कॅन करे और मैसेज बॉक्स मे अपना नाम, पता व सम्पर्क नंबर दर्ज करें।

राष्ट्रीय भावनाओं को जागृत करनेवाली
सामाजिक व पारिवारिक पत्रिका

हिंदी विवेक
We Work For Better World

पंजीयन करें

सेवा विवेक ग्रंथ

मौलिक एवं संग्रहणीय ग्रंथ, स्वयं एवं परिजनों के लिए पंजीयन करें

ग्रंथ प्रकाशन का उद्देश्य


भारत की आत्मा ...सेवा। जो केवल सहायता या दान नहीं है।

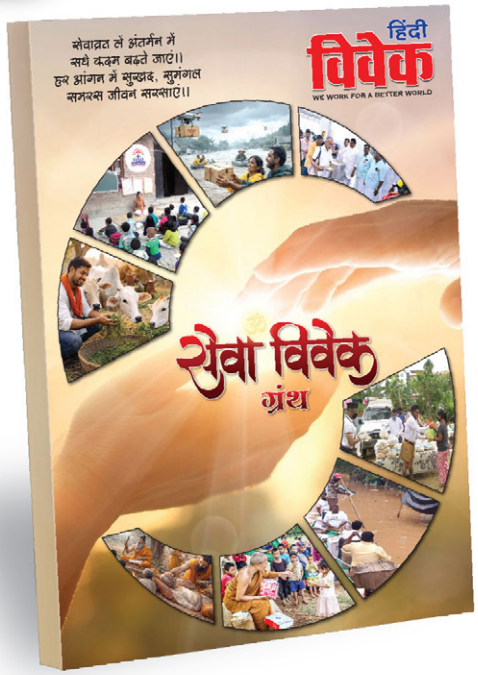

सेवा का सही अर्थ है कर्तव्य, संवेदना और सामाजिक उत्तरदायित्व का समन्वय।


सेवा को भावनात्मक कार्य से आगे ले जाकर विचारशील, सामाजिक प्रक्रिया के रूप में प्रस्तुत करना।


सेवा के पीछे की भारतीय दृष्टि, प्रेरणा और दर्शन को उजागर करना।


इस विचार को बल देना कि सेवा व्यक्ति को संस्कारित कर समाज को संगठित एवं सशक्त करने का प्रभावी माध्यम है।


आदर्श सेवा कार्यों को संकलित कर समाज के प्रबुद्ध पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत करना।



ग्रंथ का मूल्य
₹ 700/-

देश के गणमान्य विशेषज्ञों एवं लेखकों की कलम से समृद्ध विषय वस्तु से परिपूर्ण ग्रंथ

UPI पेमेंट गेटवे के लिए QR कोड स्कैन करें और मैसेज बॉक्स में अपना नाम, पता व सम्पर्क नंबर दर्ज करें।

ऑनलाइन पेमेंट करने के बाद कृपया 9594991884 पर कॉल करके सूचित करें या व्हाट्सअप करें।

Draft or Cheque should be drawn in the name of : HINDUSTHAN PRAKASHAN SANSTHA HINDI VIVEK

Bank : State Bank of India
Branch : Charkop
A/C No. : 43884034193
IFSC : SBIN0011694

स्थानीय प्रतिनिधि से सम्पर्क करें
कार्यालय : सहारा नांगरे - 9594991884
Email : hindivivekvargani@gmail.com



एमएलसी चुनाव का सबक

विश्लेषण

हाल ही में हुए एमएलसी चुनाव परिणाम में भाजपा को मिली हार से स्पष्ट हो गया है कि आगामी 2027 विधानसभा चुनाव कड़ी टक्कर का होगा। यूजीसी नियम विवाद का यदि समाधान नहीं निकला तो इसका दुष्परिणाम आगे भी चुनाव में देखने को मिलेगा।

लोकसभा चुनावों के बाद एमएलसी चुनावों में समाजवादी पार्टी के दमदार प्रदर्शन को डबल इंजन सरकार की डबल हार बताते हुए सपा 2027 के विधानसभा चुनाव के लिए मजबूत जमीन तैयार होने का दावा कर रही है। दूसरी ओर वाराणसी, गोरखपुर, आगरा और लखनऊ जैसी शहरी सीटों के परिणाम ने भाजपा को 2027 के विधानसभा चुनाव से पहले प्रत्याशी चयन, स्थानीय गुटबाजी और नीतिगत सुधारों (जैसे यूजीसी नियम विवाद) पर गहराई से आत्ममंथन करने पर मजबूर भले ही कर दिया है, परंतु यह तो तय है कि विधानसभा के बड़े फलक पर हिंदुत्व की पिच और योगी आदित्यनाथ की जीरो टॉलरेंस की नीति विपक्ष के लिए अत्यंत कठिन होगी।



रामेन्द्र सिन्हा

एमएलसी चुनावों की सबसे चौंकाने वाली बात यह रही कि प्रबुद्ध और शिक्षित युवाओं ने प्रत्याशियों को वोट देने या वरीयता तय करने के बजाय मतपत्रों पर सीधे 'णक्ऋउ ठेश्रश्र इरलज्ञ' (यूजीसी नियमों को वापस लो) लिखकर बैलट बॉक्स में डाल दिया। पूरे प्रदेश की 11 सीटों पर 53,615 वोट अवैध (निरस्त) घोषित किए गए। लखनऊ स्नातक सीट पर सबसे ज्यादा 11,233 मत, वाराणसी में 9,663 मत और इलाहाबाद-झांसी सीट पर 9,596 मत अवैध पाए गए, जिनमें से एक

बड़ी संख्या पर यूजीसी रोलबैक की मांग लिखी हुई थी। मुख्य मंत्री के गढ़ गोरखपुर-फैजाबाद शिक्षक सीट पर भाजपा प्रत्याशी की जीत का अंतर मात्र 307 वोट रहा, जबकि वहां 2,800 वोट अवैध घोषित हुए। अर्थात् जीत के अंतर से करीब 9 गुना ज्यादा वोट निरस्त हुए, जो आक्रोश की गहराई को दर्शाता है।

वास्तव में केंद्र सरकार द्वारा जनवरी 2026 में अधिसूचित किए गए यूजीसी के नए नियमों का उद्देश्य उच्च शिक्षण संस्थानों में जाति आधारित भेदभाव को रोकना था, परंतु इसके कुछ प्रावधानों को लेकर सवर्ण (सामान्य वर्ग) के संगठनों में भारी रोष फैल गया। इस नीति के कारण भाजपा के भीतर भी असंतोष की लहर दिखी। 2027 के विधानसभा चुनाव से पहले सामान्य वर्ग के इस गुस्से को शांत करना अब भाजपा के सामने सबसे बड़ी नीतिगत चुनौती बन गया है। सुप्रीम कोर्ट द्वारा इस नीति पर अंतरिम रोक लगाए जाने के बाद नवंबर 2026 के पहले सप्ताह में केंद्र सरकार ने सुप्रीम कोर्ट को सूचित किया है कि वह इन नियमों पर पुनर्विचार करने के लिए एक उच्च स्तरीय समीक्षा समिति का गठन कर रही है। सॉलिसिटर जनरल तुषार मेहता ने संकेत दिए हैं कि आगामी समय में इस सर्कुलर से विवादित और असंतुलित प्रावधानों को हटाया जा सकता है। संघ के राष्ट्रीय प्रचार प्रमुख सुनील आंबेकर का भी मानना है कि यूजीसी का यह सर्कुलर 'असंतुलित' था।

सपा ने एमएलसी चुनावों की सफलता को 2027 के लिए एक लॉन्चपैड बना लिया है। सपा ने समझ लिया है कि शिक्षित और युवा वर्ग में पुरानी पेंशन योजना, पेपर लीक, बेरोजगारी और संविदा भर्तियों को लेकर गहरा असंतोष है। पार्टी इन मुद्दों को लेकर लगातार सड़कों पर उतरने और सोशल मीडिया के जरिए भाजपा विरोधी माहौल को और तीखा करने की योजना पर काम कर रही है। पार्टी अब केवल अपने पारंपरिक यादव-मुस्लिम (वाईएम) वोट बैंक के भरोसे नहीं है। आगरा शिक्षक सीट पर 'अग्रवाल/वैश्य' उम्मीदवार को जिताकर सपा ने सिद्ध किया कि वह सवर्णों और व्यापारी वर्ग में भी पैठ बना रही है। पार्टी अब पीडीए में 'ए' का अर्थ अगड़ा, आदिवासी और आधी आबादी (महिलाएं) भी बता रही है।

उत्तर प्रदेश में 2027 के विधानसभा चुनाव से ठीक पहले विशेष गहन पुनरीक्षण और मतदाता सूचियों में भारी गड़बड़ियों का विवाद विपक्ष (विशेषकर सपा और कांग्रेस) के लिए एक बड़ा राजनीतिक और रणनीतिक हथियार बन गया है। प्रदेश के मुख्य निर्वाचन अधिकारी ने आजमगढ़ और पीलीभीत जैसे जिलों में हजारों फर्जी एंट्रियां करने और गड़बड़ियां पाए जाने पर अधिकारियों को सस्पेंड किया और जांच के आदेश दिए, तो विपक्ष के आरोपों को और हवा मिली, जबकि भाजपा अपनी 'लोकतंत्र बचाओ, अराजकता हटाओ' रैलियों में इस कार्रवाई को सही ठहराते हुए प्रचारित कर रही है कि मतदाता सूची से केवल फर्जी मतदाताओं और राशन-संसाधन चुराने वाले अवैध घुसपैठियों के नाम हटाए जा रहे हैं। भाजपा यह भी बता रही कि यदि वोट चोरी हुई तो राहुल, सोनिया गांधी जैसे नेता कैसे चुनाव जीत गए और कुछ राज्यों में कांग्रेस शासित सरकारें कैसे बन गईं, ये तर्क अकाट्य हैं और यदि 4 जनवरी 2027 को अंतिम मतदाता सूची का प्रकाशन होने तक चुनाव आयोग विपक्ष और सरकार दोनों की शिकायतों का निपटारा कर सूची को पूरी तरह शुद्ध (पारदर्शी) कर देता है, तो मतदान के दिन तक यह मुद्दा टांय टांय फिस्स हो जाएगा।

यही नहीं, अमित शाह के हस्तक्षेप और योगी आदित्यनाथ की कतिपय असंतुष्ट नेताओं से संवाद के भी सार्थक परिणाम दिखने लगे हैं। भाजपा सपा के 'जातीय नैरेटिव' (पीडीए) को काउंटर करने के लिए 2017 से पहले का गुंडाराज बनाम योगी सरकार की कानून-व्यवस्था, जीरो टॉलरेंस की नीति और विकास के मुद्दे को भी केंद्र में लाने की तैयारी में है। अयोध्या का भव्य दीपोत्सव और हिंदुत्व की पिच भी आगामी 2027 के उत्तर प्रदेश विधानसभा चुनाव में सपा और संपूर्ण विपक्ष के लिए निसंदेह एक बहुत बड़ी चुनौती सिद्ध होने वाली है। भाजपा अयोध्या के जरिये विकास और विरासत के मॉडल को पेश करती है, जिसे सीधे तौर पर खारिज करना विपक्ष के लिए राजनीतिक रूप से आत्मघाती हो सकता है। अखिलेश यादव और विपक्ष के सामने सबसे बड़ी चुनौती यह तय करने की है कि वे भाजपा के इस पिच का मुकाबला कैसे करें। यदि वह दीपोत्सव जैसे आयोजनों का विरोध करती हैं तो बहुसंख्यक वोटों के भाजपा के पक्ष में ध्रुवीकरण और यदि हिंदुत्व की राह पर चलकर मंदिरों के चक्कर लगाने लगती हैं, तो अल्पसंख्यक वोट बैंक के छिटकने का खतरा उत्पन्न हो जाता है। एमएलसी चुनावों ने स्पष्ट कर दिया है कि उत्तर प्रदेश की राजनीति अब पूरी तरह दो-ध्रुवीय (भाजपा बनाम सपा) हो चुकी है और जब मुकाबला सीधे दो दलों में होता है, तब भाजपा से निपटना आसान नहीं होता है।

●●●



पुरुषार्थ की अनकही गाथा

पुरुषार्थ की असली पहचान अपने कर्तव्यों के प्रति निष्ठा, अपनों के प्रति संवेदनशीलता और समाज के प्रति समर्पण में है। अंतरराष्ट्रीय पुरुष दिवस पर ऐसे सभी पुरुषों के त्याग, बलिदान, परिश्रम और समर्पण को नमन, जो अपने कर्म और चरित्र से जीवन को बेहतर बनाने में जुटे हैं।



मुकेश गुप्ता

पुरुष जीवन केवल दायित्वों का निर्वहन करने का नाम नहीं है बल्कि यह त्याग, संघर्ष, परिश्रम, साहस और समर्पण की एक ऐसी यात्रा है, जिसकी अनेक कहानियां प्राय: अनकही रह जाती हैं। परिवार की खुशियों के लिए अपनी इच्छाओं को पीछे रखने वाला पिता, बच्चों के भविष्य के लिए दिन-रात मेहनत करने वाला तथा परिवार की जिम्मेदारियों में सहभागी बनने वाला पति-भाई और समाज एवं राष्ट्र के लिए अपना सर्वस्व समर्पित करने वाला सैनिक-पुरुष के जीवन के ये सभी रूप उसके पुरुषार्थ को परिभाषित करते हैं। पुरुष का योगदान केवल उसकी उपलब्धियों से नहीं बल्कि उन दायित्वों और त्याग से भी आंका जाना चाहिए, जिन्हें वह बिना किसी अपेक्षा के निभाता है। हर वर्ष 19 नवम्बर को अंतरराष्ट्रीय पुरुष दिवस मनाया जाता है। इस दिवस का उद्देश्य पुरुषों और लड़कों के स्वास्थ्य, कल्याण, सकारात्मक आदर्शों तथा परिवार और समाज के प्रति उनके योगदान को सम्मान देना है। वर्ष 2026 की थीम 'The Future Is Everyone' अर्थात 'भविष्य सबका है' इस बात को रेखांकित करती है कि एक बेहतर समाज और उज्ज्वल भविष्य के निर्माण में स्त्री और पुरुष दोनों की समान भागीदारी आवश्यक है।

पुरुषार्थ : जीवन का वास्तविक परिचय

भारतीय संस्कृति में पुरुषार्थ का अर्थ केवल शारीरिक शक्ति, सामर्थ्य अथवा पराक्रम तक सीमित नहीं है। पुरुषार्थ का व्यापक अर्थ है- अपने कर्तव्यों का निष्ठापूर्वक पालन करना, कठिन परिस्थितियों में धैर्य बनाए रखना, परिवार और समाज के प्रति उत्तरदायित्व

निभाना तथा जीवन के मूल्यों के लिए दृढ़ता से खड़े रहना। भारतीय दर्शन में धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष को जीवन के चार पुरुषार्थ माना गया है। ये चारों जीवन को संतुलित, उद्देश्यपूर्ण और सार्थक बनाने का मार्ग दिखाते हैं।

पुरुषार्थ का एक महत्वपूर्ण पक्ष त्याग है। एक पिता अपने बच्चों की शिक्षा और बेहतर भविष्य के लिए अपनी अनेक इच्छाओं को स्थगित कर देता है। परिवार की आवश्यकताओं को अपनी सुविधाओं से ऊपर रखता है। कई बार अपनी परेशानियों को व्यक्त किए बिना परिवार के सदस्यों का मनोबल बनाए रखता है। यह त्याग किसी प्रदर्शन अथवा प्रशंसा की अपेक्षा से नहीं बल्कि प्रेम और दायित्वों की भावना से प्रेरित होता है।

बलिदान और समर्पण की मिसाल

भारतीय इतिहास पुरुषों के त्याग और बलिदान की असंख्य गाथाओं से भरा पड़ा है। देश की स्वतंत्रता के लिए अपने प्राण न्योछावर करने वाले क्रांतिकारी, सीमाओं पर राष्ट्र की सुरक्षा में तैनात सैनिक, समाज सुधार के लिए अपना जीवन समर्पित करने वाले महापुरुष और राष्ट्र निर्माण में जुटे कर्मयोगी- इन सभी ने अपने आचरण से पुरुषार्थ की सार्थकता सिद्ध की है।

भगत सिंह, चंद्रशेखर आजाद, सुभाषचंद्र बोस और असंख्य स्वतंत्रता सेनानियों का जीवन हमें बताता है कि जब उद्देश्य राष्ट्रहित और समाजहित हो, तब व्यक्तिगत सुख-सुविधाएं गौण हो जाती हैं। वहीं, सीमा पर तैनात सैनिकों का समर्पण हमें प्रतिदिन यह अनुभव कराता है कि देश की सुरक्षा और नागरिकों की शांति के पीछे कितने लोगों का अथक परिश्रम और त्याग जुड़ा है, परंतु पुरुषार्थ केवल युद्धभूमि अथवा इतिहास के बड़े अध्यायों में ही दिखाई नहीं देता। खेत में पसीना बहाता किसान, कारखाने में काम करता श्रमिक, विद्यार्थियों को भविष्य के लिए तैयार करता शिक्षक, रोगियों की सेवा करता चिकित्सक और परिवार की जिम्मेदारियां निभाता सामान्य व्यक्ति भी अपने कर्म से समाज को आगे बढ़ाता है।

परिश्रम : सफलता की आधारशिला

पुरुष के जीवन का एक बड़ा पक्ष उसका परिश्रम है। जीवन की चुनौतियों से जूझते हुए परिवार को आर्थिक और सामाजिक सुरक्षा देने का प्रयास, बच्चों को बेहतर अवसर उपलब्ध कराने की चिंता तथा बदलती परिस्थितियों के साथ स्वयं को विकसित करने का संघर्ष उसके जीवन का हिस्सा है। हालांकि परिश्रम और जिम्मेदारी केवल पुरुषों की पहचान नहीं हैं। महिलाएं भी समान रूप से परिवार, समाज और राष्ट्र के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। आवश्यकता इस बात की है कि हम पुरुषों के योगदान को स्वीकार करें और साथ ही स्त्री-पुरुष दोनों के श्रम, संघर्ष और जिम्मेदारियों का सम्मान करना सीखें। आज के समय में पुरुषों के सामने भी अनेक चुनौतियां हैं। उनसे मजबूत बने रहने, परिवार की जिम्मेदारियां निभाने और हर परिस्थिति में समाधान प्रस्तुत करने की अपेक्षा की जाती है। इस प्रक्रिया में कई बार उनके मानसिक स्वास्थ्य, भावनात्मक आवश्यकताओं और व्यक्तिगत संघर्षों पर पर्याप्त ध्यान नहीं दिया जाता। पुरुषों को भी अपनी भावनाएं व्यक्त करने, कठिनाइयों में सहायता मांगने और अपने स्वास्थ्य को प्राथमिकता देने का पूरा अधिकार है। संवेदनशील होना कमजोरी नहीं बल्कि मानवीय शक्ति का परिचायक है।

सकारात्मक पुरुष आदर्शों की आवश्यकता

अंतरराष्ट्रीय पुरुष दिवस हमें यह सोचने का अवसर देता है कि समाज में पुरुष की वास्तविक पहचान कैसी होनी चाहिए। आदर्श पुरुष वह नहीं जो केवल अपनी शक्ति का प्रदर्शन करे बल्कि वह है जो अपनी शक्ति का उपयोग दूसरों की रक्षा, सहायता और उत्थान के लिए करे। जो अपने परिवार में प्रेम और विश्वास का वातावरण बनाए, महिलाओं का सम्मान करे, बच्चों को अच्छे संस्कार दे और समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारियों को समझे।

एक जिम्मेदार पुरुष अपने बच्चों को केवल सफलता प्राप्त करने की शिक्षा नहीं देता बल्कि उन्हें संवेदनशीलता, अनुशासन, निष्ठा और मानवीय मूल्यों का महत्व भी सिखाता है। वह परिवार में अधिकार के साथ कर्तव्य और नेतृत्व के साथ सहभागिता को भी महत्व देता है।

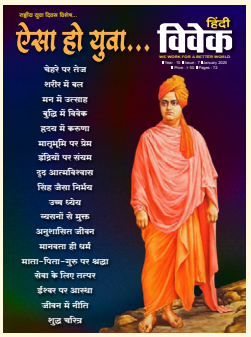
पुरुषार्थ का सम्मान, बेहतर भविष्य का निर्माण

अंतरराष्ट्रीय पुरुष दिवस किसी एक वर्ग की श्रेष्ठता स्थापित करने का अवसर नहीं बल्कि पुरुषों के जीवन, संघर्ष, योगदान और कल्याण को समझने का दिन है। यह हमें याद दिलाता है कि परिवार और समाज की मजबूती के लिए प्रत्येक व्यक्ति का योगदान महत्वपूर्ण है।

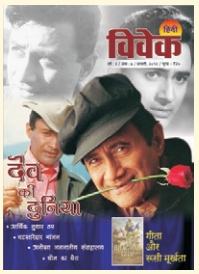
पुरुष के त्याग को पहचानना, उसके परिश्रम को सम्मान देना, उसके बलिदान को स्मरण करना और उसके मानसिक एवं शारीरिक स्वास्थ्य के प्रति संवेदनशील होना एक स्वस्थ समाज की जिम्मेदारी है। जिस प्रकार पुरुषों से परिवार और राष्ट्र के प्रति समर्पण की अपेक्षा की जाती है, उसी प्रकार उन्हें भी सम्मान, सहयोग, स्नेह और समझ की आवश्यकता होती है।

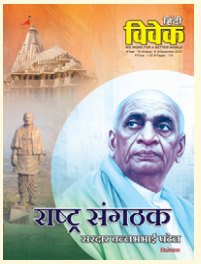
वर्ष 2026 की थीम 'The Future Is Everyone' इसी सामूहिक जिम्मेदारी का संदेश देती है। भविष्य किसी एक का नहीं बल्कि सबका है। जब पुरुष और महिलाएं परस्पर सम्मान, सहयोग और समान सहभागिता के साथ आगे बढ़ेंगे, तभी परिवार सशक्त होगा, समाज समरस बनेगा और राष्ट्र प्रगति के पथ पर अग्रसर होगा। ●●●

आपकी आवाज को बुलंद करने वाली
सम्पूर्ण पारिवारिक व सामाजिक मासिक पत्रिका













हिंदी विवेक
" We Work For A Better World"

सदस्यता शुल्क

- वार्षिक मूल्य : रु. 500/-
- त्रैवार्षिक मूल्य : रु. 1,200/-
- पंचवार्षिक मूल्य : रु. 1,800/-
- संरक्षक मूल्य : रु. 25,000/-
- विदेशी सदस्यता शुल्क वार्षिक : रु. 5,000/-

खुद ग्राहक बनें व बनाएं

- जन्म दिन तथा अन्य समारोहों में हिंदी विवेक उपहार के रूप में भेंट करें।
- मित्रों, रिश्तेदारों तथा शुभचिंतकों को हिंदी विवेक की सदस्यता प्रदान करें।
- अपने दिवंगत स्नेहीजनों की स्मृति में 11, 21, 51 या 101 पाठकों को सदस्यता दें।
- विवाह के अवसर पर सदस्यता उपहार में दें।
- नववर्ष की शुभकामना के रूप में ग्रीटिंग कार्ड के स्थान पर हिंदी विवेक का सदस्यता रसीद प्रदान करें।

UPI पेमेंट गेटवे के लिए QR कोड स्कैन करें और मैसेज बॉक्स में अपना नाम, पता व सम्पर्क नम्बर दर्ज करें।

हिंदी विवेक कार्यालय

प्लॉट नम्बर 7, आरएससी रोड नम्बर 10, सेक्टर – 2, श्रीकृष्ण बिल्डिंग के पीछे, हनुमान मंदिर बस स्टॉप के समीप, चारकोप, कांदिवली (पश्चिम), मुंबई – 400067

सम्पर्क : +91 95949 91884

hindivivekvargani@gmail.com / hindivivekadvt@gmail.com



सुभाष चंद्र लखेड़ा

सर्दी केवल मौसम नहीं बल्कि संयम और सावधानी का परीक्षा है। सही कपड़े, पौष्टिक भोजन, गर्म घर, साफ पानी और एक-दूसरे का ध्यान रखकर हम इस मौसम को सुरक्षित और स्वस्थ बना सकते हैं। ठंड से बचना केवल अपनी जिम्मेदारी नहीं, बल्कि परिवार और समाज के प्रति भी हमारी जिम्मेदारी है।

ठंड से बचाव कुछ जरूरी सुझाव



सर्दी के मौसम में ठंड, कोहरा और सूखी त्वचा आम समस्याएं हैं, लेकिन लंबे समय तक ठंड में रहना खतरनाक भी हो सकता है क्योंकि इससे हाइपोथर्मिया और फ्रॉस्टबाइट जैसी बीमारियां हो सकती हैं। थोड़ी सावधानी और सही तैयारी से हम इस मौसम को सुरक्षित रूप से बिता सकते हैं।

ठंड से बचने का सबसे आसान तरीका कई परतों के कपड़े पहनना है। एक मोटे कपड़े की जगह अंदर सूती या ऊनी कपड़ा, फिर स्वेटर और ऊपर हवा रोकने वाला जैकेट पहनें। परतों के बीच फंसी हवा शरीर को गर्म रखती है।

बाहर निकलते समय सिर, कान, गर्दन, हाथ और पैरों को जरूर ढकें। टोपी, मफलर, दस्ताने और मोजे पहनें। दस्तानों की तुलना में मिट्टेन्स अधिक गर्म रहते हैं। मिट्टेन्स में अंगूठे के लिए एक अलग हिस्सा होता है, जबकि बाकी की चारों उंगलियां एक ही बड़े हिस्से में एक साथ रहती हैं।

पसीना आने या बारिश-कोहरे में भीगने पर गीले कपड़े तुरंत बदल दें। गीले कपड़े शरीर से गर्मी तेजी से निकाल देते हैं, इसलिए सूखे रहना बहुत जरूरी है।

घर के इस्तेमाल होने वाले कमरों में पर्याप्त गर्मी रखें। खासकर बच्चों, बुजुर्गों और बीमार लोगों के लिए गर्म कमरा जरूरी है। रात में खिड़कियां बंद रखें और दरवाजों के नीचे से आने वाली हवा रोकें।

कंबल, रजाई, गर्म कपड़े और गर्म पानी की बोतल का इस्तेमाल करें। जरूरत हो तो अतिरिक्त कमरों को बंद करके परिवार एक कमरे में रहे, ताकि गर्मी एक जगह रहे।

हीटर, अंगीठी या कोयला जलाते समय हवा का रास्ता खुला रखें। बंद कमरे में कोयला जलाने से कार्बन मोनोऑक्साइड का खतरा बढ़ सकता है। हीटर को पर्दे, बिस्तर, कंबल या फर्नीचर से दूर रखें और सोने या घर से निकलने से पहले बंद कर दें।

सर्दियों में लोग अक्सर पानी कम पीते हैं, लेकिन पानी की कमी से शरीर कमजोर हो सकता है। दिन में पर्याप्त पानी पियें और गर्म सूप, हर्बल चाय या दूध जैसे गर्म पेय लें। शराब

और अत्यधिक कैफीन वाले पेय से बचें क्योंकि इनसे शरीर की गर्मी तेजी से खो सकती है।

संतुलित भोजन शरीर को ऊर्जा और गर्मी देता है। मौसमी सब्जियां, फल, अनाज, दालें, नट्स, अंडे, दूध और दही जैसे पौष्टिक पदार्थ खाएं। गर्म खाना और नियमित भोजन शरीर के तापमान को बनाए रखने में मदद करता है।

सर्दियों में त्वचा शुष्क हो जाती है, इसलिए मॉइस्चराइजर या नारियल तेल का नियमित इस्तेमाल करें। होंठों पर लिप बाम लगाएं और हाथ-पैरों को धोने के बाद सूखने दें। बहुत गर्म पानी से लंबे समय नहाने से त्वचा और अधिक रूखी हो सकती है, इसलिए गुनगुने पानी का उपयोग बेहतर है।

सुबह और शाम के समय ठंड अधिक होती है, इसलिए बाहर जाने से पहले गर्म कपड़े पहनें। बच्चों, बुजुर्गों और पुरानी बीमारी वाले लोगों को अधिक सावधानी की जरूरत होती है। उनके कपड़े, भोजन और घर का तापमान नियमित रूप से देखें।

कोहरे और बर्फबारी के दिनों में अनावश्यक यात्रा से बचें। यात्रा करनी पड़े तो मौसम की जानकारी लें, परिवार को रास्ता और समय बताएं, मोबाइल चार्ज रखें और आपातकालीन सामग्री साथ रखें।

सड़कों पर बर्फ या पाला जमा हो तो पैर फिसल सकते हैं। पकड़ वाले जूते पहनें, धीरे चलें और बर्फीली सतहों पर दौड़ने से बचें। बाहर काम करने वालों को बीच-बीच में गर्म जगह पर आराम करना चाहिए।

लगातार कांपना, थकान, भ्रम, बोलने में अस्पष्टता, नींद जैसी स्थिति या स्मृति में कमी हाइपोथर्मिया के संकेत हो सकते हैं। शरीर का तापमान 95 डिग्री फारेनहाइट से कम होने पर तुरंत चिकित्सा सहायता लें।

अंगुलियों, पैरों, नाक, कानों या चेहरे पर सुन्नपन, सफेद या नीली त्वचा दिखे तो फ्रॉस्टबाइट यानी तुषारदंश का संकेत हो सकता है। प्रभावित हिस्से को गर्म पानी में न डुबोयें और त्वचा को मलने से बचें। गीले कपड़े हटाकर व्यक्ति को गर्म कंबल में लपेटें और जल्द डॉक्टर से संपर्क करें।

सर्दियों में अकेले रहने वाले बुजुर्गों, बच्चों और जरूरतमंद पड़ोसियों से संपर्क रखें। उनके घर की गर्मी, दवाइयां, भोजन और स्वास्थ्य की जानकारी लें। छोटी-छोटी मदद से कई लोगों को ठंड के खतरों से बचाया जा सकता है।

•••

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ को समझने के लिए मौलिक एवं संग्रहणीय पुस्तक



पद्मश्री रमेश पतंगे लिखित
'हिंदी विवेक' द्वारा प्रकाशित

हम संघ में क्यों हैं...

संघ विचारों की मूल प्रेरणा, संघकार्य को समझने की प्रक्रिया और इन सभी से संघ स्वयंसेवकों को अनायास मिलनेवाले राष्ट्रबोध और कर्तव्यबोध का वर्णन इस पुस्तक में किया गया है।

हिंदी विवेक
" We Work For A Better World"

पंजीयन करें
पुस्तक का मूल्य ₹250/-

Draft or Cheque should be drawn in the name of HINDUSTHAN PRAKASHAN SANSTHA HINDI VIVEK

Bank Details : State Bank of India, Branch - Charkop, A/C No. : 00000043884034193, IFSC Code : SBIN0011694

UPI पेमेंट गेटवे के लिए QR कोड स्कॅन करे और मैसेज बॉक्स मे अपना नाम, पता व सम्पर्क नंबर दर्ज करें।

ग्रंथ पंजीकरण हेतु पत्रिका के स्थानीय प्रतिनिधि अथवा कांदिवली कार्यालय में सम्पर्क करें।

प्रशांत : 9594961855, संदीप : 9082898483, भोला : 9702203252, कार्यालय : 9594991884



साम्यता

वैदिक सनातन संस्कृति एवं जनजातीय परम्परा



श्रीश देवपुजारी

वैदिक सनातन संस्कृति और जनजातीय परम्परा विरोधी नहीं, अपितु भारतीय संस्कृति की परस्पर पूरक धाराएं हैं। दोनों परम्पराओं का मूल संदेश एक ही है- प्रकृति का दोहन नहीं तो पोषण और संरक्षण करना। दोनों लोककल्याण का संदेश देती हैं। भारत की सांस्कृतिक एकता इसी विविधता में निहित है।

भारत की सांस्कृतिक पहचान उसकी प्राचीनता, निरंतरता और विविधता में निहित है। वैदिक सनातन संस्कृति और जनजातीय परम्पराएं इसी भारतीय संस्कृति की दो महत्वपूर्ण धाराएं हैं। सामान्यतः इन्हें भिन्न-भिन्न परम्पराओं के रूप में प्रचारित किया जाता है, किंतु भारतीय ज्ञान-परम्परा के दृष्टिकोण से दोनों का मूल आधार प्रकृति के प्रति श्रद्धा, जीवन की पवित्रता, सामुदायिक सहयोग और आध्यात्मिक दृष्टि है। जनजातीय समाज भारत की प्राचीन लोक-संस्कृति का जीवंत स्वरूप है, जबकि वैदिक संस्कृति उसका दार्शनिक एवं आध्यात्मिक आधार प्रस्तुत करती है।

ऋग्वेद, अथर्ववेद, उपनिषद, रामायण, महाभारत तथा पुराणों में प्रकृति, वन, पर्वत, नदियों और जनजातीय समुदायों का अनेक स्थानों पर उल्लेख मिलता है। इससे स्पष्ट होता है कि भारतीय सभ्यता का विकास नगरों और वनों दोनों की सहभागिता से हुआ।

वैदिक सनातन संस्कृति की संकल्पना

'सनातन' का अर्थ है- जो शाश्वत, नित्य और सार्वकालिक हो। वैदिक संस्कृति का मूल तत्व ऋत, धर्म और यज्ञ है। ऋग्वेद में सम्पूर्ण सृष्टि को एक दैवी व्यवस्था का अंग माना गया है।

एकं सद्विप्रा बहुधा वदन्ति। (ऋग्वेद 1.164.46)

अर्थात सत्य एक है, ज्ञानी उसे अनेक रूपों में व्यक्त करते हैं। यह वैचारिक उदारता भारतीय संस्कृति का आधार है।

अथर्ववेद के पृथ्वी सूक्त में कहा गया है-

माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः। (अथर्ववेद 12.1.12)

अर्थात पृथ्वी हमारी माता है और हम उसके पुत्र हैं। यही भाव जनजातीय समाज के जीवन में भी प्रत्यक्ष दिखाई देता है। उदाहरण के रूप में गढ़चिरोली जिले में गोंड जनजाती रहती है। वहां भूमि को हल से जोतना निषिद्ध है। मातृभूमि के प्रति इतना गहरा लगाव देख नयनों में आंसू आ जाते

हैं। खाने के लिए धान्य की कमी से जूझने वाले जनजातीय अधिक उत्पादन के लालच में भूमि को चीरना नहीं चाहते। कारण उनके लिए भूमि यह धनार्जन का साधन नहीं, तो जीवित मां है।

जनजातीय समाज यद्यपि आर्थिक रूप से विपन्न है, किन्तु अपनी आस्था के प्रति अडिग है। चन्द्रपुर जिले के राजुरा तहसील में जीवती पहाड़ों पर रहनेवाली कोलाम जनजाती आर्थिक प्रलोभनों के प्रभाव में आकर कभी अपनी आस्था को छोड़कर ईसाई नहीं बनी। भले ही अन्य जातियां बन गई, जो उनसे अधिक सम्पन्न हैं।

जनजातीय परम्परा भारतीय संस्कृति की लोकधारा

भारत में भील, गोंड, संथाल, मुंडा, उरांव, हो, खड़िया, पहाड़िया, गारो, जयंतियां, नागा, मिजो, कूकी आदि सैकड़ों जनजातियां निवास करती हैं। उनका अधिष्ठान जल, जंगल और जमीन है। वे प्रकृति को केवल संसाधन नहीं, अपितु परिवार का सदस्य मानते हैं।

इसलिए गडचिरोली जिले में रहने वाले जनजातीय गाय को दोहते नहीं। कारण उस दूध पर बछड़े का ही केवल अधिकार है, ऐसा वें मानते हैं। इसलिए उस क्षेत्र में दूध की चाय मिलती नहीं।

वैदिक और जनजातीय प्रकति पूजक हैं

जनजातीय समाज में वृक्षों और ग्राम देवताओं की पूजा होती है। उनके पूजास्थल को वें सरना, जाहेर इत्यादि नामों से सम्बोधित करते हैं।

सनातन परम्परा में अश्वत्थ (पीपल), वट, बिल्व, शमी, पलाश, कदम्ब, आंवला, तुलसी इत्यादि का विभिन्न पर्वों पर पूजन होता है। जैसे– वटसावित्री, तुलसी विवाह इत्यादि।

संस्कृत का प्रसिद्ध श्लोक भारतीयों की वृक्षों के प्रति अगाध निष्ठा को प्रदर्शित करता है।

सेवितव्यो महावृक्षः फलच्छायासमन्वितः।
यदि दैवात् फलं नास्ति छाया केन निवार्यते।।

दोनों परम्पराओं में पर्वत और नदियां देवता मानी जाती हैं। जैसे गोवर्धन, कैलाश आदि पर्वत। दोनों पर्वतों की प्रदक्षिणा की जाती है। गोवर्धन पूजा का प्रसंग भागवत पुराण में वर्णित है। जनजातियों के लिए पार्श्वनाथ की पहाड़ी पूजनीय है। जैनों के 23 वें तीर्थंकर पार्श्वनाथ की पहाड़ी के चोटी पर तपस्थली है। इसलिए जैनों का भी वह तीर्थ स्थल है। नर्मदा नदी की परिक्रमा की जाती है। गंगा की आरती प्रतिदिन होती है। वैदिक सनातन संस्कृति में पृथ्वी, अग्नि, सूर्य, वायु, उषा इत्यादि प्रकृति के अङ्गों की उपासना होती थी। उन्हीं की स्तुति में वैदिक सूक्तों का उच्चारण होता है। आज भी किसी अनुष्ठान के आरंभ में कलशपूजा की जाती है। कलश में जल रहता है। वास्तविक वह जल पूजन ही है। जनजातीय परम्परा में भी धरती, मरांग बुरु (पर्वत), सिंगबोंगा (सूर्य), अग्नि, डोनी (सूर्य), पोलो (चंद्र) इत्यादि देवताओं की पूजा आज भी होती है।

सूर्योपासना –जनजातीय चेतना में सूर्य केवल आकाशीय पिंड नहीं, अपितु जीवन, उर्जा और नैतिक सामाजिक व्यवस्था के प्रत्यक्ष नियामक देवता के रूप में प्रतिष्ठित हैं। उनका कृषि चक्र और ऋतु परिवर्तन से सीधा सम्बन्ध है। सनातन परम्परा में सूर्य आरोग्य, प्राणशक्ति और कल्याण के अधिष्ठाता है। उन्हें जगत् की आत्मा के रुप में स्वीकार किया गया है।

संस्कार – जनजातीय समाज में जन्म, नामकरण, कर्णवेध, विवाह और मृत्यु से सम्बन्धित संस्कारों का विशेष महत्व है। कुछ जनजातियों में यज्ञोपवीत की प्रथा भी है। सनातनियों में सोलह संस्कार करने होते हैं। जनजातीय लोग जो संस्कार सम्पन्न करते हैं वें सभी 16 संस्कारों में निहित हैं।

मंडा या भोक्ता पर्व – झारखंड शासन के पर्यटन विभाग के छपे साहित्य के अनुसार मंडा या भोक्ता परब मुख्य रूप से भगवान शिव एवं माता पार्वती को समर्पित पर्व है। व्रत रखने वाले पुरुषों को भोक्ता कहा जाता है। बूढ़ा महादेव एक ऐसे देवता हैं, जो वनवासी एवं तपस्वी है और सामान्यों के कष्टों को समझते हैं। वें पशुपति भी हैं। शिव का यह सहज रूप सभी समुदायों को भाता है। यद्यपि भारतीय समाज प्रकृति पूजक रहा है, फिर भी उसे शिव का आकर्षण है। वैशाख मास की चिलचिलाती धूप में भोक्ता शारीरिक कष्टों को सहन करता है ताकि अच्छी वर्षा हो, धरती की उर्वरता बढे और लहलहाती फसलें सबको अन्न प्रदान करें। कई स्थानों पर छऊ नृत्य की मनमोहक प्रस्तुतियां होती है, जिसमें पौराणिक कथाओं एवं शिव–पार्वती की लीला को जीवंत किया जाता है। नृत्य ही प्रार्थना बन जाता है और संगीत भक्ति का माध्यम।

करमा– करमा (कर्मा) उत्सव केवल एक जनजातीय पर्व नहीं है, अपितु प्रकृति, कर्म, कृषि और सामुदायिक जीवन की भारतीय दृष्टि का सजीव उत्सव है। यह मुख्यतः झारखंड, छत्तीसगढ़, ओडिशा, मध्य प्रदेश, बिहार, पश्चिम बंगाल और पूर्वी महाराष्ट्र (विदर्भ) के जनजातीय समाजों में मनाया जाता है।

●●●



शताब्दी वर्ष के कार्यक्रमों की समीक्षा

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की वार्षिक अखिल भारतीय कार्यकारी मंडल की बैठक इंदौर में सम्पन्न हुई। बैठक के अंतिम दिन सरकार्यवाह दत्तात्रेय होसबाले ने पत्रकारों को सम्बोधित किया। पत्रकार वार्ता के प्रारम्भ में सरकार्यवाह ने डेली कॉलेज के प्रबंधन का व्यवस्था के लिए और मीडिया के बंधुओं का कार्यकारी मंडल की बैठक और संघ के विषयों को सकारात्मक रूप से समाज के बीच प्रचारित-प्रसारित करने के लिए धन्यवाद ज्ञापित किया एवं दीपावली पर्व की शुभकामनाएं प्रेषित कीं। सरकार्यवाह जी ने बताया कि बैठक में देशभर से 406 अपेक्षित में से 398 कार्यकर्ता उपस्थित रहे। प्रतिवर्षानुसार दशहरा और दीपावली के बीच आयोजित इस बैठक में शताब्दी वर्ष में आयोजित कार्यक्रमों का वृत्त प्रस्तुत किया गया। शताब्दी वर्ष के कार्यक्रम समाज के व्यापक सहयोग से सम्पन्न हुए। यह समाज की सज्जन शक्ति को संघ से अवगत कराने का अवसर था।

सेवा कार्यों में स्वयंसेवकों की सहभागिता

भारत में अलग-अलग स्थानों पर नैसर्गिक आपदाओं के समय वहां के स्वयंसेवकों, सामाजिक संस्थाओं और समाज ने साथ मिलकर अलग-अलग स्थानों पर सेवा प्रदान करने का प्रयास किया।

चित्रकूट में मंदाकिनी नदी में अत्यधिक बाढ़ के कारण पीड़ित शहर एवं ग्रामीण परिवारों को 350 कार्यकर्ताओं ने घर-घर जाकर राहत किट का वितरण किया। 6000 से अधिक लोगों के भोजन के लिए स्थाई व्यवस्था चलाई। 5600 लोगों को चिकित्सा प्रदान की। साथ ही साथ पशुओं के टीकाकरण का भी प्रयास हुआ।

लखनऊ क्षेत्र में अति वर्षा के कारण शहर में भीषण बाढ़ की स्थिति में 300 से अधिक कार्यकर्ताओं ने पीड़ित परिवारों के लिए भोजन, पानी, दवाईयां इत्यादि जीवन उपयोगी वस्तुओं का वितरण किया।

असम के शिवसागर और जोरहाट जिले में बाढ़ प्रभावित क्षेत्र में 1600 से अधिक स्वयंसेवकों ने 42,200 परिवारों तक भोजन, पानी, दवाईयां इत्यादि सहायता उपलब्ध कराई। 5 करोड़ से अधिक राशि जमा करके यह सेवा कार्य किया गया।

उड़ीसा और आंध्र क्षेत्र में अर्नब चक्रवात के कारण समुद्र सीमा से जुड़े पूरे क्षेत्र में कंधमाल, गंजम, श्रीकाकुलम, विजयवाड़ा जिलों में वहां के स्वयंसेवक, समाज को साथ में लेकर पीड़ितों की विविध सहायता हेतु सक्रिय हैं।

कार्य विस्तार

एक लाख से अधिक स्थानों पर प्रत्यक्ष संघ कार्य

शताब्दी वर्ष में स्वयंसेवकों द्वारा किए गए। शाखा विस्तार की भी समीक्षा के साथ ही शाखाओं को अधिक प्रभावी एवं नियमित बनाने, उनका दृढ़ीकरण करने तथा अधिकाधिक स्थानों पर शाखाएं प्रारम्भ करने के सम्बंध में भी विचार-विमर्श हुआ।

देश में कुल 63,208 स्थानों पर 99,423 दैनिक शाखाएं लग रही हैं। इस वर्ष दैनिक शाखाओं की संख्या में 12,025 की वृद्धि तथा 8,156 शाखा स्थानों की वृद्धि हुई। कुल 26,826 स्थानों पर 34,982 साप्ताहिक मिलन और 13,363 स्थानों पर 14,096 मासिक मंडली लग रही है। साप्ताहिक मिलन संख्या में 2,712 तथा मासिक मंडली संख्या में 463 की वृद्धि हुई। पिछले वर्ष 93,156 कुल स्थानों की तुलना में इस वर्ष कुल 1,03,397 स्थान प्रत्यक्ष संघ कार्ययुक्त हो गए हैं।

संघ की भौगोलिक रचना में अब 46 प्रांतों के स्थान पर देशभर में 88 सम्भाग होंगे।

शताब्दी वर्ष कार्यक्रम वृत्त

10 करोड़ से अधिक घरों में सम्पर्क

शताब्दी वर्ष के अंतर्गत विजयादशमी 2025 से विजयादशमी 2026 तक आयोजित कार्यक्रमों की समीक्षा की गई। इन कार्यक्रमों के आगामी क्रियान्वयन, अनुवर्तन तथा उनके माध्यम से समाज के विभिन्न वर्गों तक पहुंचने के विषय में विचार-विमर्श हुआ। विशेष रूप से पंच परिवर्तन के विषयों को समाज के व्यवहार में प्रभावी रूप से उतारने तथा उनके निरंतर अनुवर्तन की कार्ययोजना पर चर्चा हुई।

शताब्दी वर्ष में कार्य विस्तार और समाज में संघ, हिंदुत्व पंच-परिवर्तन के विचार को ले जाने की दृष्टि से विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किए गए।

हिंदू सम्मेलन- समाज के सभी लोग साथ आएं, सामाजिक समरसता, एक-दूसरे के सहयोग और सकारात्मक जीवन शैली के विषयों पर प्रयासों के लिए आयोजित हिंदू सम्मेलनों में 4,93,76,694 समाज जन सम्मिलित हुए, जिनमें सवा दो करोड़ से अधिक मातृशक्ति की सहभागिता उल्लेखनीय है। 3,08,449 ग्रामों सहित 37,080 ग्रामीण मंडलों और 28,584 नगरीय बस्तियों में कुल 65,664 हिंदू सम्मेलन आयोजित हुए। अरुणाचल प्रदेश, लद्दाख और अंडमान जैसे स्थानों पर भी हिंदू सम्मेलनों का आयोजन हुआ।

गृह सम्पर्क- संघ की 100 वर्षों की यात्रा और संघ विचार को लेकर कार्यकर्ताओं ने गृह सम्पर्क अभियान चलाया। कुल 4,63,340 ग्रामों और 41,825 नगरीय बस्तियों में 10,22,05,665 घरों में संघ के कार्यकर्तों की टोलियां सम्पर्क करने पहुंची। गृह सम्पर्क में कार्यकर्ताओं ने प्रत्येक घर में 15 से 20 मिनट बैठ कर चर्चा की।

युवा कार्यक्रम- शताब्दी वर्ष में 21,237 स्थानों पर महाविद्यालयीन विद्यार्थियों हेतु आयोजित 57,243 कार्यक्रमों में कुल 31,26,404 विद्यार्थियों की सहभागिता रही। इसी प्रकार युवा व्यवसायियों के लिए आयोजित 14,285 कार्यक्रमों में कुल 6,90,835 युवा व्यवसायी सम्मिलित हुए। इस प्रकार कुल 38,17,239 युवाओं की प्रत्यक्ष उपस्थिति इन कार्यक्रमों में रही।

प्रमुख जन गोष्ठी- जिला केंद्रों और अन्य प्रमुख स्थानों पर आयोजित 3,207 प्रमुख जन गोष्ठियों में 4,29,262 प्रमुख समाज जन सम्मिलित हुए।

सामाजिक सद्भाव बैठक- समाज के विभिन्न वर्गों में सद्भाव, सहयोग, भेदभाव रहित समाज निर्माण और साथ मिलकर सामाजिक चुनौतियों के समाधान का कार्य करने की दृष्टि से समाज का नेतृत्व करने वाले बंधु भगिनियों की सामाजिक सद्भाव बैठकों का आयोजन किया गया। देशभर में 5,028 ग्रामीण खंडों और 3,318 नगरों में कुल 8,346 सामाजिक सद्भाव बैठकों का आयोजन हुआ, जिनमें 36,916 मातृशक्ति सहित 3,79,581 समाज प्रमुखों की सहभागिता रही।

युवाओं में नशे के प्रचलन को रोकने के विशेष प्रयास

युवाओं में बढ़ते नशे के प्रचलन से पूरा समाज और सरकार चिंतित है। संघ, सामाजिक संस्थाओं के सहयोग से नशीले पदार्थों से युवाओं को बचाने का सभी से आग्रह करता है। नशे के व्यापार के अंतरराष्ट्रीय षड्यंत्र से बचाने का कार्य, प्रशासन और सरकार कर रही है। गृह मंत्रालय इस विषय में विशेष कार्य कर रहा है। बैठक में नशे के विरुद्ध सामाजिक चेतना और पुनर्वास में सामाजिक संगठनों के साथ कार्य करने की योजना बनाई गई।

●●●





उद्यमियों ने मुख्यमंत्री को सौंपा 6 करोड़ 33 लाख रु. का चेक

सूखाग्रस्त मराठवाड़ा की सहायता के लिए छत्रपति संभाजीनगर के उद्यमी जगत ने मिलकर 6 करोड़ 33 लाख रु. एकत्रित किए और इस सहायता राशि का चेक मुख्य मंत्री देवेंद्र फडणवीस को सौंप दिया। मुख्य मंत्री के ओएसडी राजेंद्र साबले के प्रयासों से शहर में आयोजित हुए 'प्रौढ़ प्रताप पुरंदर' नाट्य महोत्सव के दौरान ये चेक सौंपा गया। इस अवसर पर ओबीसी कल्याण मंत्री अतुल सावे और पूर्व केंद्रीय मंत्री डॉ. भागवत कराड भी उपस्थित थे।

गौरतलब है कि पानी के लिए संघर्ष कर रहे लोगों और पशुओं के चारे के लिए परेशान सूखाग्रस्त किसानों एवं ग्रामीणों को सहारा देने के लिए छत्रपति संभाजीनगर का उद्यमी जगत एकजुट हुआ और उन्होंने मिलकर एक बैठक का आयोजन किया। उद्यमी विवेक देशपांडे और राम भोगले की पहल पर आयोजित बैठक में मराठवाड़ा के सूखाग्रस्त क्षेत्रों के लोगों की सहायता करने का निर्णय लिया गया। बैठक में अतुल सावे, डॉ. भागवत कराड के साथ किशोर शितोले, उद्यमी मानसिंग पवार, नरेंद्र गुप्ता, उमेश दशरथी, मनीष शर्मा तथा शहर के अन्य उद्यमी उपस्थित थे। सूखे की गंभीर स्थिति और पानी एवं चारे की कमी को ध्यान में रखते हुए सामाजिक दायित्व के तहत बड़ी सहायता राशि जुटाने का संकल्प लिया गया था।

पहली ही बैठक में एक करोड़ रुपये का आंकड़ा पार

सहायता अभियान की शुरुआत करते हुए विवेक देशपांडे ने स्वयं 51 लाख रुपये देने की घोषणा की। राम भोगले ने 30 लाख रुपये, जबकि नरेंद्र गुप्ता ने 25 लाख रुपये की सहायता देने का ऐलान किया। इन तीनों घोषणाओं के साथ ही पहली बैठक में सहायता राशि का आंकड़ा एक करोड़ रुपये के पार पहुंच गया। इसके बाद अनुरंग जैन और तरंग जैन ने एक-एक करोड़ रुपये, जबकि राहुल धूत ने 51 लाख रुपये की सहायता देने की घोषणा की। समीर मुळे, अनिल भंडारी, पिती, राजपाल और अग्रवाल ने प्रत्येक ने 25 लाख रुपये देने की घोषणा की। प्रल्हाद पन्हाळे और हरविंदरसिंग बिंद्रा ने 15-15 लाख रुपये का योगदान दिया। वोखार्ड की ओर से 12 लाख रुपये की सहायता घोषित की गई।

इसी प्रकार मानसिंग पवार, उमेश दशरथी, देवगिरी नागरी सहकारी बैंक, सचिन मुळे, मिलिंद केळकर, केशव लिला और भाईश्री ग्रुप ने प्रत्येक ने 11 लाख रुपये, जबकि आनंद सूर्यवंशी ने 10 लाख रुपये देने की घोषणा की।



ओतुरः जुन्नर तालुका जिला-पुणे महाराष्ट्र में ओतुर के पास वाघदरा बांध क्षेत्र में विश्वसंकल्प फाउंडेशन द्वारा संचालित 'गौतीर्थ गौशाला और देसी गौवंश संवर्धन एवं अनुसंधान केंद्र' का उद्घाटन वसुबारस गुरुवार दि. 05/11/2026 को उत्साहपूर्ण वातावरण में हुआ। यह गौशाला स्वर्गीय अधिवक्ता विश्वासराव डुंबरे पाटिल की स्मृति में स्थापित की गई है और संरक्षण, संवर्धन एवं अनुसंधान के माध्यम से स्वदेशी पशुओं की संख्या बढ़ाने का संकल्प लिया गया। इस पहल का मुख्य उद्देश्य गाय की दुर्लभ स्वदेशी प्रजातियों की रक्षा करना और इस मूल्यवान विरासत को भावी पीढ़ियों तक पहुंचाना है।

वाघदारा बांध क्षेत्र में गौशाला सहित अनुसंधान केंद्र स्थापित

स्वदेशी गायों का संरक्षण, अनुसंधान और संवर्धन इस केंद्र का उद्देश्य है कि यहां न केवल गौपालन किया जाएगा बल्कि देसी गायों के दूध, गौमूत्र और गोबर से औषधीय, स्वास्थ्यवर्धक और कृषि उत्पाद तैयार करने के लिए अनुसंधान भी किया जाएगा। साथ ही किसानों को देसी पशुओं के कृषि और पर्यावरणीय महत्व से अवगत कराकर जैविक खेती को बढ़ावा देने पर भी जोर दिया जाएगा। इस केंद्र का उद्घाटन श्रीमती जयश्रीताई वि. डुंबरे पाटिल ने किया और विश्व हिंदू परिषद के संयुक्त क्षेत्र प्रमुख भाऊरावजी कुदळे की प्रमुख उपस्थिति में उन्होंने गौ कार्य बारे में महत्वपूर्ण मार्गदर्शन किया।

श्रीमती जयश्रीताई वि. डुंबरे पाटिल की उपस्थिति में कार्यक्रम का शुभारम्भ पारम्परिक गौ पूजन से हुआ। इसके बाद गौ भक्तों को महाप्रसाद वितरित किया गया। विश्व हिंदू परिषद के संयुक्त क्षेत्र प्रमुख भाऊरावजी कुदळे, गौसम्पदा मासिक क्षेत्र प्रमुख रविंद्र सिद्धेश्वर, जिला महिला प्रमुख यवम विश्व संकल्प फाउंडेशन की प्रमुख विश्वस्त कु. रेणुकाताई विश्वासराव डुंबरे पाटिल, विश्व हिंदू परिषद के प्रतिनिधि इस अवसर पर उपस्थित थे। **- रविंद्र सिद्धेश्वर**


पितांबरी®
देवभक्ती®
अगरबत्ती
With Natural Ingredients
मनाएँ दीपावली
का त्योहार,
प्राकृतिक सुगंध
के साथ!
दीपावली की मंगलमय
शुभकामनाएँ !
पितांबरी®
देवभक्ती®
अगरबत्ती
अनुभव करें भक्ति की शक्ति!
चंदन
गुलाब
मोगरा
NATURAL
Pitambari Products Pvt. Ltd.
Maharashtra: 8291853804, North: 7011012599, South: 9886553105,
East: 7752023380, 9867102999, CRM: 022 - 67035564/5699
Toll Free: 18001031299
Visit: www.pitambari.com | CIN: U52291MH1989PTC051314